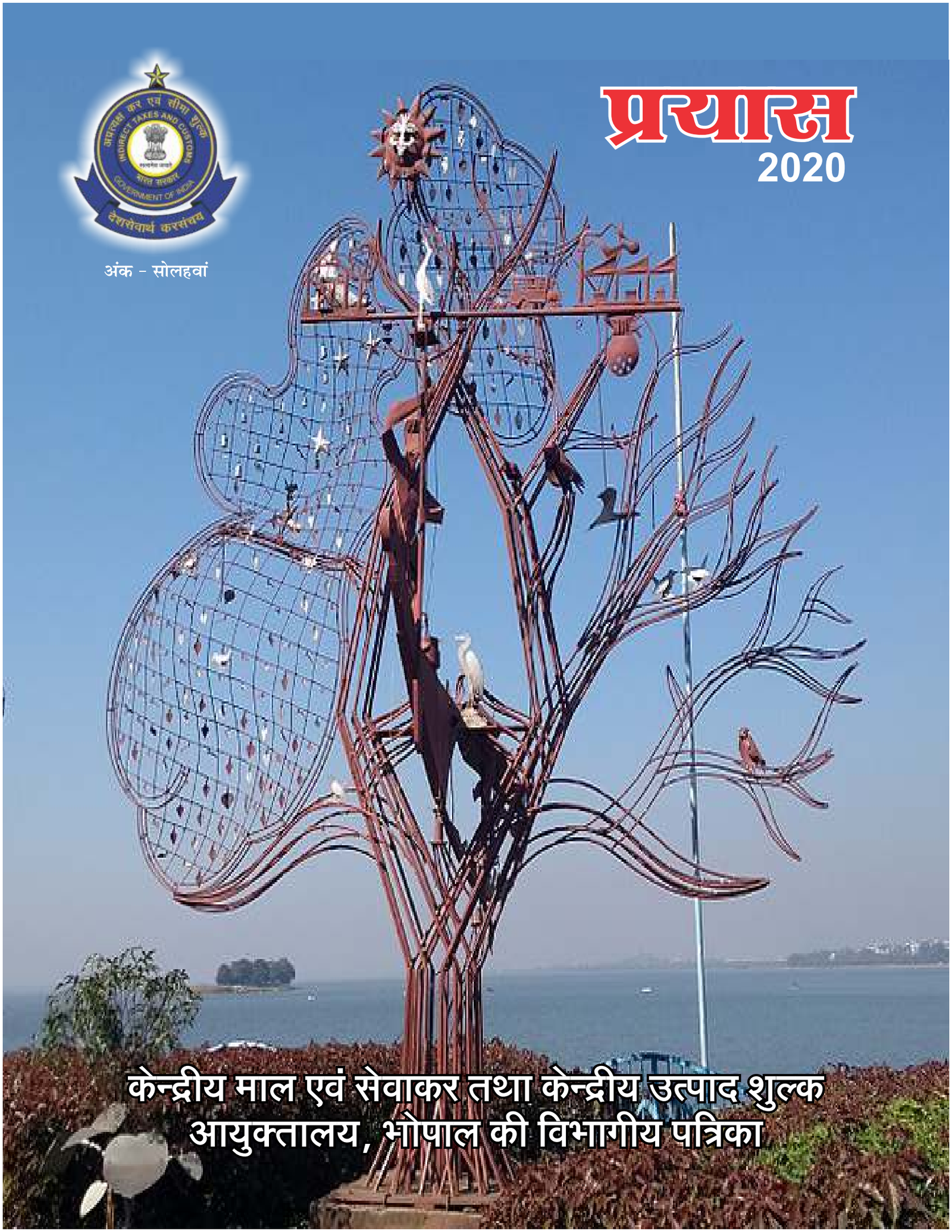

प्रयास
2020

अंक - सोलहवां

केन्द्रीय माल एवं सेवाकर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क
आयुक्तालय, भोपाल की विभागीय पत्रिका

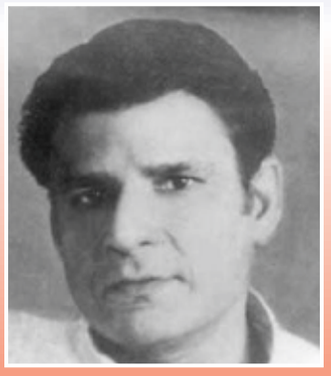

दुष्यंत कुमार

हो गई है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
शर्त थी लेकिन कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि से सूरत बदलनी चाहिए

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए

प्रयास

विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका

अंक - 16

वर्ष - 2020

संरक्षक
श्री वी.के. सक्सेना
मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक
डॉ. संदीप श्रीवास्तव
प्रधान आयुक्त

प्रबंध संपादक
श्री लोकेश कुमार जैन
संयुक्त आयुक्त

संपादक
डॉ.(श्रीमती) जूही कादरी
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

(विशेष सहयोग)
श्री पी.के.शर्मा
उप-आयुक्त
दीपक कुमार
कर सहायक

प्रकाशक
केन्द्रीय माल एवं सेवाकर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय
35, प्रशासनिक क्षेत्र, अरेरा हिल्स, भोपाल (म.प्र.) 462001

केवल विभागीय प्रयोगार्थ
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं,
संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं।

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	कार्यालय प्रधान आयुक्त सीजीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, भोपाल...	जूही कादरी	1
2.	वर्तमान समस्याओं में गांधी की प्रासंगिकता	मनदीप जलोटा	2
3.	''पूर्व से वर्तमान तक के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा के उत्थान में सहायक और बाधक तत्व''	लोकेश कुमार जैन	3
4.	सब ही है श्रेष्ठ	मृत्युन्जय सिंह चौहान	5
5.	हिन्दी के प्रसार में गांधी जी की भूमिका	दिनेश सिंह	6
6.	मुल्क	त्रिलोक सिंह	7
7.	उम्मीद	इन्दु सिन्हा	7
8.	सपने देखते रहिऐ	इन्दु सिन्हा	8
9.	संविधान प्रदत मौलिक अधिकार के तहत शांतिपूर्ण प्रदर्शन और मानव अधिकार कैसे एक-दूसरे के पूरक हैं।	आलोक कुमार	8
10.	रतनगढ़- एक ऐतिहासिक स्थल	जितेन्द्र ठाकुर	10
11.	हौसला	शिवानी कीर	12
12.	जब मैं बड़ा हो जाऊँगा	ईशान पटेल	12
13.	हमारे जवान	अर्पित पटेल	12
14.	तालियों की महिमा	एस.एम. लांजेवार	13
15.	समय का सदुपयोग	अनिल भोकरे	14
16.	तत्व बोध	प्रभात कुमार शर्मा	14
17.	मूर्ति पूजा	प्रभात कुमार शर्मा	15
18.	सतत विकास	प्राची गोयल	15
19.	धर्म क्या है ?	मनीष कुमार प्रसाद	16
20.	जिम्मेदारी	दामिनी रानी	16
21.	आज ही क्यों नहीं ?	सलीम	17
22.	भूल जाएं भूलने की आदत	सुशील कुमार कटारिया	19
23.	अगर त्याग दो	अमित शर्मा	20
24.	दो रिक्शेवाले	प्रभात खन्ना	20
25.	सृजन	प्रियंका दुबे	21
26.	भूकम्प	प्रभात खन्ना	22
27.	भारत के समुद्र तट	रोहित स्वर्णकार	23
28.	भोजन की थाली में महकते कीटनाशक	शब्बीर कादरी	24
29.	सात समन्दर पार हिन्दी पत्रकारिता का परचम	जूही कादरी	26
30.	कैंसर:-जिंदगी से हार, फिर एक नई शुरूआत	तरुण शर्मा	28
31.	राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2019		31

संरक्षक की कलम से

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि केंद्रीय माल एंव सेवाकर तथा केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, भोपाल की विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका 'प्रयास 2020' के सोलहवें अंक का प्रकाशन हो रहा है। राजभाषा हिन्दी न केवल भारत की समेकित संस्कृति का परिचालक है बल्कि इसमें राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता भी है।

केंद्रीय माल एवं सेवाकर तथा केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, भोपाल द्वारा प्रकाशित पत्रिका प्रयास विभागीय अधिकारियों की सृजनात्मकता को प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम है। कल्पना और विचारों के जादुई विमान में बैठ कर आप कई अंजान आयामों की यात्रा कर सकते है।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और रचनाकारों को बधाई देते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि भोपाल आयुक्तालय का यह प्रयास भविष्य में भी हमें इसी तरह लाभान्वित करता रहेगा।

शुभमंगल कामनाओं सहित,

विनोद कुमार सक्सेना

मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक की कलम से

सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में परम्पराओं का परस्पर योगदान होता है। परम्पराएँ बनाना और उनका निरन्तरता से निर्वहन करना हमारी प्रगतिशीलता को दर्शाता है। इसी कड़ी में केंद्रीय माल एवं सेवाकर तथा केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, भोपाल की विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका के 'प्रयास' के इस नूतन अंक का प्रकाशन हमारे परम्पराओं के निर्वाहन और प्रगतिशीलता को प्रमाणित करता है।

देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाले हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा है। सरकार की राजभाषा नीति को व्यवहार में लाना हमारा संवैधानिक दायित्व है। अतः कार्यालय के दैनिक कार्य को करते समय हमें राजभाषा अधिनियम और नियमों का पूरी सजगता से पालन करना चाहिए।

आशा है 'प्रयास 2020' का सोलहवां अंक आप सभी पाठकों को सुरुचिपूर्ण लगेगा। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए मैं इसके सफल सम्पादन हेतु संपादन मंडल के प्रत्येक सदस्य को बधाई देता हूँ।

शुभ मंगल कामनाओं सहित।

डॉ. संदीप श्रीवास्तव

प्रधान आयुक्त

प्रबंध संपादक की कलम से

मेरे लिए ये अपार प्रसन्नता का विषय है कि मैं आपके कर कमलों में विभागीय पत्रिका प्रयास 2020 का सोलहवां अंक सौंप रहा हूँ।

लेखन रचनाशीलता एवं अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त माध्यम होता है एवं विभागीय गृह पत्रिकायें राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट लेखन हेतु सर्वोकृष्ट मंच प्रदान करती है जो कि भारतवर्ष की प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार की नीति के भी अनुरुप है।

इस पत्रिका के माध्यम से विभागीय अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों ने राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी निष्ठा एवं प्रगाढ़ प्रेम को दर्शाने का प्रयास किया है। मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि आज हम हिन्दी की प्रगति एवं विकास यात्रा में अपनी सहभागिता दे पा रहे हैं। जिसका प्रतिफल इस पत्रिका के रुप में हमारे समक्ष है।

मैं पत्रिका के मुद्रण में सतत रुप से प्रयासरत सम्पादन मण्डल को विशेष रुप से बधाई देता हू और कामना करता हूँ कि पूर्व अंकों की तरह पत्रिका का यह अंक भी अपार सफलता प्राप्त करें। मैं अपेक्षा करता हूँ कि 'प्रयास 2020' में प्रकाशित विभागीय लेखों एवं अन्य रोचक एवं समसामयिक आलेखों के माध्यम से हिन्दी राजभाषा शासकीय प्रयोजन में ओर भी बलवती होगी।

शुभमंगल कामनाओं सहित।

लोकेश कुमार जैन

लोकेश कुमार जैन

संयुक्त आयुक्त (राजभाषा)

संपादकीय

भाषा के संबंध में इमर्सन का कथन है कि ''भाषा वह नगर है जिसे खड़ा करने में हर व्यक्ति ने कोई न कोई पत्थर लगाया है।'' हिन्दी भाषा का महत्व केवल राजभाषा के रुप में नहीं है, बल्कि जनभाषा के रुप में भी सर्वोपरि है क्योंकि यह साक्षरों के साथ साथ निरक्षरों की भी भाषा है। सत्य तो यह भी है कि भारत जैसे विशाल ओर बहु भाषायी देश में संपर्क भाषा के रुप में हिन्दी ने सफल भूमिका निभाई है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आयुक्तालय, भोपाल की विभागीय राजभाषा पत्रिका 'प्रयास 2020' के सोलहवां अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। मानव समुदाय के लिए सृजनात्मक और कल्पनाशीलता की अभिव्यक्ति अत्यंत आवश्यक है। अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने के लिए राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है, इसी क्रम में आयुक्तालय की राजभाषा पत्रिका 'प्रयास' भोपाल में कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिजनों की सृजनात्मकता को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। पत्रिका का प्रकाशन करना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है, किन्तु उच्च अधिकारियों के कुशल मार्गदर्शन और सम्पादन मण्डल के अथक प्रयासों से यह कार्य आसान हो गया। राजस्व संग्रहण में व्यस्त होते हुए भी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने जिस उत्साह के साथ पत्रिका में अपनी बहुमूल्य रचनाएँ प्रस्तुत की हैं उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'प्रयास 2020' के इस अंक को पढ़कर आप आनंदित होंगे।

आपकी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव हमारा उत्साहवर्धन करेंगे।

जूही कादरी

डॉ. (श्रीमती) जूही कादरी

वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कार्यालय प्रधान आयुक्त सीजीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, भोपाल में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में किए गए कार्यों का विवरण।

सीजीएसटी एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, भोपाल राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में प्रतिबद्ध है। समय-समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी दिशा निर्देशों का आयुक्तालय में अनिवार्य रूप से पालन किया जाता है। हर संभव प्रयास किया जा रहा है कि 'क' क्षेत्र हेतु वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए। 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण आयुक्तालय में हिन्दी के मुताबिक अनुकूल माहौल है जो कि यहाँ के दैनिक प्रशासनिक कार्यों में द्रष्टव्य है। सीजीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, भोपाल में पिछले वर्ष राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में किए गए कार्यों का विवरण:-

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठके प्रधान आयुक्त महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा हेतु तिमाही बैठक का आयोजन प्रत्येक तिमाही के अंत में किया जाता है। इन बैठकों में राजभाषा हिन्दी की स्थिति, वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों एवं अनुभागों एवं शाखाओं में हिन्दी कार्यान्वयन की प्रगति पर विस्तृत चर्चा होती है। आयुक्तालय के अधीन प्रभागीय कार्यालयों में ये बैठक पृथक रूप से आयोजित की जाती है।

हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्ट हर तिमाही के अंत में हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्ट आनलाइन माध्यम से राजभाषा हिन्दी की वेबसाइट पर अपलोड की जाती है तथा निष्पादन प्रबंधन महानिदेशालय, नई दिल्ली प्रेषित की जाती है। साथ ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भोपाल को प्रत्येक छमाही की रिपोर्ट प्रेषित की जाती है।

राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा सितंबर माह में हिन्दी दिवस/पखवाड़ा धूम धाम से मनाया जाता है और अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर भोपाल आयुक्तालय की विभागीय पत्रिका ''प्रयास -2020'' का विमोचन किया जा रहा है।

हिन्दी कार्यशाला एवं प्रशिक्षण आयुक्तालय में समय-समय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है जिसमें राजभाषा हिन्दी से जुड़े विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। कार्यशाला में अतिथि वक्ताओं को भी आमंत्रित किया जाता है।

हिन्दी पुस्तकालय दिसंबर 2019 में आयुक्तालय में प्रधान आयुक्त महोदय डॉ. संदीप श्रीवास्तव के प्रयासों से एक नवीन पुस्तकालय की स्थापना की गयी, जिसका उदघाटन बोर्ड सदस्य माननीय श्री आर.के.बढ़थ्वाल ने किया। पुस्तकालय में लगभग 600 पुस्तकों का संग्रह है।

डॉ. (श्रीमति) जूही कादरी
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

वर्तमान समस्याओं में गांधी की प्रासंगिकता

कभी-कभी भारत की वर्तमान चुनौतियों को देख कर गालिब की कही वो बात याद आती है जिसमें अपने मुल्क में ही अलग-थलग हो चुके गालिब कहते है, हिन्दुस्तान प्रबल झंझावतो और आग की लपटों से घिरा हुआ है। यहाँ के लोग किस नई व्यवस्था की तरफ उम्मीद और खुशियों से देखें। गालिब के प्रश्न आज भी प्रासंगिक है। जिनका उत्तर गाँधीवाद में मिल सकता है। फिर प्रश्न उठता है कि अगर गाँधी जी हमारे बीच होते तो इन चुनौतियों को किस तरह देखते ? बढ़ रही बेरोज़गारी से बदहवास युवाओं को इससे निपटने की क्या सलाह देते ? पिछले 50 वर्षो में घाटे का सौदा बन चुकी कृषि और लगातार आत्महत्या कर रहे किसानों को क्या कहते ? किसानों की अवहेलना करने वाली नीति नियन्ताओं को क्या सलाह देते ? साथ ही दिग्भ्रमित, राजनीतिक पार्टियों को गांधी सेवा और पवित्रता का क्या संदेश देना चाहते ? कश्मीर, नक्सल-बाड़ी बस्तर और नार्थइस्ट में स्कूल अस्पतालों के निर्माण में बाधा पहुँचाने वाले हिंसक समूहों को गांधी क्या सलाह देते ? क्या अंग्रेजो भारत छोड़ो नारे को आज वो पलटकर विदेशी कम्पनियों भारत छोड़ो का नारा देते ? सारे जीवन साम्प्रदायिकता, जातिवाद से लड़ने वाले बापू आज इन समस्याओं को अपने दौर में कैसे हल करना चाहते थे।

हिन्द स्वराज में समकालीन अनेक ज्वलंत प्रश्नों का गांधी ने उत्तर दिया था, जो उनका उस दौर के प्रभावशाली नेता के साथ ही उत्कृष्ट पत्रकार होने का प्रतीक है। गांधी अपने सरलता और सहजता के लिए तो जाने ही जाते थे, साथ ही वे सामान्य जन को सहज उपलब्ध थे। सामान्य लोगों की दर्द को समझने के लिए गांधी भारतीय रेल के तीसरे दर्जे में यात्रा करते थे। इन अनुभवों के कारण ही जनता की ताकत के साथ उसकी सीमाओं का उनको अंदाजा था। रचनात्मक कार्यो की लयबद्धता से समाज को बदलने का उनका अपना अनुभव था। ये बात सच है कि आज के दौर में आये कई नियम गांधी के सिद्धान्तों द्वारा प्रेरित है। उदाहरण के लिए कम्पनी बिल में सुधार करके भारतीय कम्पनियों को अपने लाभ के 2 प्रतिशत सीएसआर खर्च करने के लिए बाध्य किया गया है। गांधी ने 4 मई 1906 को दक्षिण अफ्रीका में अपने भाषण के दौरान कहा था कि दक्षिण अफ्रीका में, जहां तक मुझे याद है, वकालत करते हुए मैने कभी असत्य का प्रयोग नहीं किया और अपनी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा केवल लोक-सेवा के लिए ही अर्पित कर दिया था। ये दर्शाता है कि गांधी कितने दूरदर्शी थे।

देश के नस्लवाद, साम्प्रदायिकता और दलितों के खिलाफ लगातार बढ़ रही हिंसा से झुलसते भारत के नेताओं और नागरिकों को एक बार फिर से गांधी के कथनों को पढ़ना चाहिये। महात्मा गांधी ने अंहिसा का महत्व बताते हुए यंग इंडिया (02-01-30) में लिखते है कि यदि मनुष्य जाति अपने आदतन अहिंसक न होती तो उसने युगों पहले अपने हाथों अपना नाश का लिया होता। लेकिन हिंसा और अहिंसा के पारस्परिक संघर्ष में अन्त में अहिंसा ही सदा विजयी सिद्ध हुई है। सच तो यह है कि हमने राजनैतिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लोगों में अहिंसा की शिक्षा के प्रसार की पूरी कोशिश करने जितना धीरज ही प्रकट नहीं किया। ऐसे में सरकारों को चाहियें कि गांधीजी के अहिंसा का दृढ़ता से पालन कराया जाय। साथ ही समाज को चाहिये कि वो अपराधी प्रवृत्ति के राजनेताओं को नकार दें।

गाँधी ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए हरिजन सेवक (20-02-1937) में लिखा है कि गांवो की बुरी हालत का कारण यह है कि जिन्हें शिक्षा का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उन्होने गाँवो की बहुत उपेक्षा की है। ये बात आज भी उतनी प्रंसगिक है, जितनी उस समय में थी। आज हमारे गांव के गांव विरान होते जा रहे है क्योंकि वहां रोजगार के साधन नहीं है। जिन लोगों के अन्दर थोड़ा बहुत उद्यम था वो शहर की ओर पलायित हो गये। पिछले 25 वर्षो के दौरान भारत में तीन तरह के पलायन की प्रवृत्ति देखी गयी। पहला गाँवों से छोटे शहरों की ओर, छोटे शहरों से महानगरों की ओर और महानगरों से विदेशी की ओर। कभी-कभी ये सीधे छोटे गांवों से विदेशों की ओर या महानगरों की ओर भी हो जाता है। इस कारण से उन प्रतिभाओं को, जिनका लाभ उस गांव परिवार या शहर को मिलना चाहिये था नहीं मिलता। वहीं दूसरी ओर जब युवा पलायित हो जाते हैं तो उनके माँ बाप वहां अकेले रह जाते है और तमाम तरह की बुढ़ापे की समस्या का अकेले सामना करते हैं साथ ही नौनिहालों को बुजुर्गो के प्रति अपेक्षित संवदेनशीलता नहीं आ पाती, जो पहले हमारे गांवों में सहजता से उपलब्ध हो जाती थी। इस अन्तरपीढ़ी गैप को भारत सरकार के सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय के द्वारा संचालित अभियान इंटरजेनेरेशनल बॉडिंग प्रोग्राम भी सफल नहीं हो रहा।

आज के दौर में जब किसान लगातार आत्महत्यायें कर रहें और सरकार स्मार्ट शहर को लेकर ज्यादा चिंतित है। ऐसे में गांधीजी द्वारा 'यंग इण्डिया' में लिखी बात और भी प्रासंगिक हो जाती है जिसमें गांधी ने कहा है कि शहर अपनी हिफाज़त अपने आप कर सकते है। हमें तो अपना ध्यान गांवो की ओर लगाना चाहिए। हमें उन्हें उनकी संकुचित दृष्टि, उनके पूर्वाग्रहों और वहम आदि से मुक्त करना है और इसे करने के सिवा इसका और कोई तरीका नहीं है कि हम उनके साथ उनके बीच रहें, उनके सुख:दुख में हिस्सा लें और उनमें शिक्षा तथा उपयोगी ज्ञान का प्रचार करें। यदि हम ऐसा करने लगे और सूखे से प्रभावित गांवो, कर्ज में डूबे परिवारों से मिलने लगे उनका दर्द बांटे तो किसानों की आत्महत्याओं को रोका जा सकता है। क्योंकि आज भी भारत गांवों में बसता है। गाँवो का समृद्ध विकास ही देश का विकास है।

जिन निराशावादी लोगों को अब भी लगता है कि गांधी तो अतीत की बात है। उनके लिए मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि कैम्ब्रिज के महान इतिहासकार एफ.डब्ल्यूँ. मीटलैंड ने कहा है कि जो कुछ भी अब अतीत है, वह कभी भविष्य की बात रही होगी। तानाशाही और विश्वयुद्धों के दौर मे गांधी जी अहिंसा को चरितार्थ करते हुए जीवन जिया था। यही कारण है कि आइंस्टाइन ने अपनी पुस्तक 'आउट ऑफ माई लेटर ईयर्स' में गांधी पर प्रशंसात्मक टिप्पणी करते हुए उन्होने लिखा है, 'पीढ़ियो के बाद इस बात पर शायद ही कोई विश्वास करेगा कि इस प्रकार का सचमुच जीता-जागता मनुष्य इस धरती पर था। इस तरह वह सर्वकालिक उदीयमान सितारा है।'

– मनदीप जलोटा
(उपायुक्त)

''पूर्व से वर्तमान तक के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा के उत्थान में सहायक और बाधक तत्व''

हिन्दी एक भाषा ही नहीं, एक जीवन शैली है। जिस प्रकार जीवन जीन के लिए कपड़ा, रोटी, मकान एवं अन्य चीजें जरुरी होती है उसी प्रकार जीवन जीने के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ती है। भाषा से अभिप्राय समझने-समझाने की शैली से होता है। प्राचीनकाल से मनुष्य भाषा के सहारे ही जीवन यापन एवं सामाजिक प्राणी के रुप में समाज में सार्थक है।

पूर्व में आर्यो की भाषा हिन्दी को माना जाता है क्योंकि पूर्व में प्रचलित अन्य भाषाओं प्राकृत, अपभ्रंश एवं संस्कृत सभी की लिपि देवनागरी रही है। कहा जाता है कि हिन्दी नाम से ही हिन्दुस्तान कहा जाता था। हिन्दी भाषा के रुप में सर्वाधिक प्रचलित भाषा रही है। हिन्दी भाषा में कई ग्रंथ गद्य-पद्यरुप में कविता कहानी संग्रह मिलते है। वर्तमान में हिन्दी भाषा भारत में अत्यधिक प्रचलित है। 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी भाषा को भारत में राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। वर्धा समिति के प्रस्ताव के बाद प्रत्येक 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाने लगा था, प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस अब मनाया जाता है। 1975 से विश्व हिन्दी सम्मेलन मनाया जाना विश्व के 250 से भी अधिक विश्व विद्यालयों में हिन्दी को मान्यता प्राप्त होना, कई पत्र-पत्रिकाओं को हिन्दी में अनुवाद होना एवं फिल्मों जैसे 'जुरासिक पार्क' का हिन्दी संस्करण, रेडियो सेवाओं का हिन्दी में सेवाएं प्राप्त होना, साथ ही सर्च इंजन गूगल, विकीपीडिया आदि द्वारा हिन्दी में भरपूर सामग्री उपलब्ध करवाना, सभी प्रतियोगी परिक्षाओं में हिन्दी भाषा में उत्तर लिखने की स्वतंत्रता, वर्तमान में ये सभी हिन्दी को भाषा के रुप में मान्यता प्रदान करता है। हिन्दी आज भारत देश की ही नहीं, वैश्विक भाषा के रुप में अपनी सार्थकता सिद्ध कर रही है। चीनी भाषा मन्दारिन के बाद हिन्दी भाषायी लोगों को दूसरा स्थान है। विश्व भर में हिन्दी भाषा का महत्व दिनों दिन बढ़ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र हो या संचार के साधन हो सभी जगह हिन्दी भाषा को स्थान प्राप्त हो रहा है। राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने से हिन्दी भाषा को सरकारी संरक्षण एवं संवर्धन प्राप्त हुआ है। सरकारी ऑफिसों में हिन्दी भाषा में कार्य करने को बल मिला है। सभी सरकारी कागजात, नामपट्ट, स्मारिका, कार्यालयीन आदेश, स्टैम्प हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध है। हिन्दी भाषा में टिप्पणी लेखन हो रहा है। हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के क्रम में हिन्दी सप्ताह या हिन्दी पखवाड़ा मनाया जाता है। हिन्दी भाषा में काम करने वाले अधिकारियों को पुरस्कृत किया जाता है। इस प्रकार भारत मे सरकारी संरक्षण से भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा मिल रहा है।

हिन्दी भाषा के उत्थान में जहां कई तत्व सहायक हैं वही कई तत्व बाधक भी रहे है। पूर्व में हिन्दी भाषा को जटिलतम भाषा माना जाता था, पर जैसे - जैसे इसे समझने वाले आगे आए, हिन्दी भाषा की सभी ने अपनाना शुरु कर दिया। कई अन्य भाषाओं को मानने वाले हठाग्रही लोगों ने हिन्दी भाषा को प्रचारित होने से रोका, परन्तु धीरे-धीरे हिन्दी भाषा की मिठास एवं सरल हिन्दी को सभी लोगों ने अपनाना शुरु कर दिया। संस्कृत एंव अन्य भाषायी हठाग्रहियों ने अपने को सर्वोच्च दिखाने के लिए ऐसा किया परन्तु धीरे-धीरे हिन्दी भाषा ने सभी लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। भारत में बोली जाने वाली लगभग कई भाषाओं के आधार पर भाषायी विविधता भी हिन्दी भाषा के बाधक के रुप में रहा। दक्षिण के कई राज्यों ने हिन्दी भाषा को अपने अस्तित्व का संकट माना, जिससे भाषा को सभी राज्यों द्वारा स्वीकार नही किया गया और ऐसा ही आज भी कई दक्षिण के राज्यों द्वारा माना जाता है। जबकि हिन्दी भाषा को अपनाने से कोई अस्तित्व का संकट नहीं होता है बल्कि इससे सभी भाषाओं की सर्वव्यापकता का सिद्धान्त लागू होता है। इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा के प्रति अत्यधिक लगाव पाश्चात्य शैली का अनुकरण करने का नतीजा है, उच्च दर्जे के रुप में अंग्रेज़ी भाषा का समझने की भूल हिन्दी भाषा के लिए बाधक तत्व रहा। हिन्दी भाषा का वर्तमान में सार्थक होना इस बात का प्रमाण है कि भारत जेसे बड़े देश में जहां हिन्दी भाषा बहुसंख्यक लोगों की भाषा है। इस कारण हिन्दी भाषा के प्रति वैश्विक रवैया भी बदला है। भारत एक बहुत बड़ा बाजार है। भाषा ही जहां लोगों के बीच समझने - समझने का माध्यम है वही बाजार के रुप में भारत देश में हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ी है। हिन्दी फिल्मों का अत्याधिक प्रचलन, हिन्दी में वैश्विक कम्पनियों की रुचि, हिन्दी को विदेशी विश्व विद्यालयों में पढ़ाया जाना सभी इसके सहायक तत्व है। हिन्दी का सरलतम रुप, भाषायी मिठास, सरकारी संरक्षण आदि भी हिन्दी भाषा के उत्थान में सहायक तत्व है। हिन्दी भाषा के उत्थान में कम्प्यूटर का भी योगदान रहा है। यूनीकोड आदि जैसे सॉफ्टवेयर के प्रयोग से हिन्दी में प्रयोग बढ़ा है। हिन्दी में सर्च इंजन गूगल आदि द्वारा सामग्री उपलब्ध होने से हिन्दी का चलन बढ़ा है। हिन्दी में सभी पत्र-पत्रिकाओं का संस्करण एवं अनुवाद मिलने से लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि अधिक हुई है। कम्प्यूटर, मोबाइल आदि ने हिन्दी भाषा को सामान्य जन जीवन का हिस्सा बना दिया है। सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी भाषा का उपयोग स्वीकार किया गया है। हिन्दी भाषा के उत्थान में कवि सम्मेलनों का भी अपना महत्व है। हिन्दी शब्दकोष आदि ने हिन्दी भाषा को सरल से सरलतम बना दिया है। इन सभी कारणों से हिन्दी भाषा का दिनो दिन उत्थान हुआ है।

हिन्दी भाषा के उत्थान में ये जरुरी नहीं कि अन्य भाषाओं के प्रति उदासीन रवैया हो। अन्य भाषाओं की स्वीकार्यता हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक होगी। भाषायी एकता हिन्दी भाषा को बल प्रदान करेगी एवं देश के विकास में सहायक सिद्ध होगी। विदेशी लोगों द्वारा हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ी है। इसलिए भारत में हमें हिन्दी भाषा की सर्वोच्च स्वीकार्यता माननी चाहिए। इससे हिन्दी भाषा के साथ-साथ हिन्दुस्तान भी आगे प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

क्योंकि कहा गया है :-

''हिन्दी है हम,
हिन्दी है हम,
हिन्दी है हम,
वतन है हिन्दुस्तां हमारा-हमारा।
सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा।।''

लोकेश कुमार जैन
संयुक्त आयुक्त

सब ही है श्रेष्ठ

यह युद्ध है प्रबुद्धों का,
तर्क से कुबुद्धों का।
कहानी यह अतिशय की,
बनाई जाती जन गण की।

वह स्वंय में जीता था,
स्वयं ही का प्रतिद्वंदी था।
नित भोर से सांझ तक,
दायित्व ही का वह बंदी था।

सहसा मिल गया प्रबुद्धों से।
व्यापार के विशुद्धों से।
सारंग से सरलतम वह,
मिल गया गरलतम से।

सीख जो मिली घर से,
गीता, कुरान और किताबों से।
बिसार सारी एक क्षण में,
परब्रहम श्रेष्ट्ता के मन में।

ठान मिथक प्रतिशोध मन में,
लगा घुलने मन ही मन में।
कर प्रतिकार का संधान मन में,।
बैठा कुयोगाकुल मन ही मन में।

बन उत्प्रेरक एक आदेश आया,
श्रेष्ठतम परब्रहम का कुयोग लाया।
बन परधर्म का वह काल आया,
प्रतिपालक वह विकराल आया।

परधर्मी जो भी समक्ष आया,
काल के गाल में वह जा समाया।
विधर्मी शवों से पाट दी धरा सारी,
निज धर्मांधित गरल जा उनमें उतारी।
हर लिए प्राण निश्ठित परधार्मियों के,
कर दिए अनाथ शावक परधर्मियों के।
था कुत्सित उत्कर्ष का यह कुयोग,
श्रेष्ठतम धर्मावलम्बी दंग का संयोग।

फिर लौट कर घर जब वो आया,
सम्मुख वही भर्तसित विध्वंस पाया।
हा देख कर भग्नावशेष जिसके,
अवाक मूर्त वह कुछ ना पाया।

हुआ स्तब्ध शोकाकुल हृदय में,
ले अलख अपने घरौंदे की हृदय में।
पर रुंधे कंठ से विलाप निकले कैसे,
परधर्मियों का संताप सम्मुख आ गया जैसे।

सोचा करते हैं हम किसी के वास्ते,
आ खड़ा होता है सम्मुख वह स्वयं के रास्ते।
हो प्रभाव किसी का भी हमारे चित्त पर,
स्वयं निर्णय लेते हैं हम स्वयं के वास्ते।

करनी मात्र से कोई श्रेष्ठ होता है नही,
बिन अनुचर कोइ भी ज्येष्ठ होता है नहीं।
इस धर्मांध श्रेष्ठता में हम क्यूं पड़ें,
क्यूं ना माने सब ही हैं श्रेष्ठ सब हैं बड़े।

मृत्युन्जय सिंह चौहान
निरीक्षक

हिन्दी के प्रसार में गांधी जी की भूमिका

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ हो रहे सामाजिक भेदभाव के विरोध में लगातार अपनी आवाज बुलंद कर रहे बेरिस्टर गांधी ने सन 1915 मे वापस भारत की धरती पर कदम रखा । आम भारतीय की दशा और देश को समझने के लिए उन्होंने पूरे देश की यात्रा करने का निश्चय किया। इस यात्रा ने गुजराती भाषी और विदेश से पढ़े बेरिस्टर गांधी के जीवन को एक नयी दिशा दी। इस यात्रा ने भारत की आत्मा और उसमें बसे आम जन की भावनाओं का समझने का अवसर दिया। यह यात्रा उनके बेरिस्टर मोहन करमचंद गांधी से महात्मा गांधी बनने के लिए मील का पत्थर का साबित हुई।

इस यात्रा के दौरान गांधी जी ने यह महसूस किया कि स्वंतत्रता आंदोलन को धारदार और प्रभावी बनाने के लिए एक ऐसी भाषा होना आवश्यक है, जो पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सके। गहन चिंतन और मनन के बाद उन्होंने यह माना कि हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जो आम जन की भाषा होने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता के लिए मजबूत नींव का काम करेगी। उन्होनें अपनी बात इन शब्दों के साथ रखी ''अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है। और हिन्दी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है ''।

वर्ष 1918 की एक घटना का उल्लेख यहां प्रासांगिक है। इंदौर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन था। वहां पर सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए गांधी जी ने कहा था, ''जैसे ब्रिटिश अंगेज़ी में बोलतें हैं और सारे कार्यो में अंगेज़ी का ही प्रयोग करते हैं वैसे ही मैं आप सभी से प्रार्थना करता हूं कि हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा का सम्मान अदा करें, राष्ट्रीय भाषा बनाकर हमें कर्तव्य को निभाना चाहिए''। उसके पूर्व 1917 में भी उन्होंने भरूच मे गुजरात शिक्षा सम्मेलन के अपने संबोधन में, ''एक राष्ट्रीय भाषा की आवश्यकता पर बल दिया और व्यक्त किया कि ''हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है''।

विशाल व्यक्तित्व के धनी गांधी जी ने न केवल हिन्दी को राष्ट्र भाषा का सम्मान दिलाने की बात कही, साथ ही अपने विचारो को फलीभूल करने के लिए उन्होंने सन् 1918 में ही ''दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा'' की स्थापना की। सूदूर दक्षिण में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने अपने पांच दूत मद्रास (अब चेन्नई) भेजे। इस पांच दूतों में से एक उनके पुत्र श्री देव दास गांधी थे। इस संस्था के गांधी जी आजीवन अध्यक्ष रहे। महात्मा गांधी के बाद इस संस्था के अध्यक्ष भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बने। गांधी जी का मानना था कि दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार-प्रसार स्थानीय लोग ही करें।

गांधी जी का विचार था कि न्यायालयों के काम-काज की भाषा अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी होना चाहिए। उनका मानना था कि हिंदी का प्रयोग केवल बोलचाल और देश की आधिकारिक भाषा के तौर पर ही नहीं बल्कि न्यायालयों में सुनवाई के लिए भी किया जाना चाहिए। हिन्दी का सारे देश में प्रचार-प्रसार करने के लिए और अपनी बात आम जन तक सहजता से पहुचांने के लिए उन्होंने हिन्दी में नवजीवन और हरिजन नाम से समाचार पत्रों का प्रकाशन किया। जो उस दौर में देश के स्वतत्रंता आंदोलन के सशक्त स्तंभ बने।

यहां पर देश के स्वतंत्र होने के समय की एक घटना का उल्लेख करना प्रांसगिक होगा। स्वतंत्र होने के कुछ समय पश्चात् कुछ अंग्रेज पत्रकार महात्मा गांधी के पास आए और उनका साक्षात्कार अंग्रेज़ी में लेने लगे। इस पर महात्मा गांधी ने उनसे कहा ''मेरा देश आजाद हो गया है। अब मैं हिन्दी में ही बात करूंगा।'' इस घटना से उनका हिंदी के प्रति अनुराग स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

14 सिंतबर सन 1929 को संविधान सभा मे जब हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया उस अवसर पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने हिन्दी के लिए बापू द्वारा किए गये प्रयासों को रेखांकित करते हुए उन्हें याद किया था।

आज जब हिन्दी विश्व पटल पर अपना स्थान बना चुकी है, ऐसे समय पर हम सब का कर्तव्य है कि गांधी जी के सपनों को फलीभूत करते हुए हम अपने कार्यव्यवहार मे, इस सहज, सरल और सुबोध हिन्दी का अधिक-से-अधिक उपयोग करें जिससे सही अर्थों में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सम्मान मिल सके।

बापू के शब्दों में:-

''हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय से बातचीत करता है और हिन्दी हृदय की भाषा है''।

दिनेश सिंह

अधीक्षक

मुल्क

यह नदियों का मुल्क है,
पानी भी भरपूर है।
पर बोतल में बिकता है,
पन्द्रह रुपये शुल्क है।

यह गरीबों का मुल्क है,
जनसंख्या भी भरपूर है।
परिवार नियोजन मानते नहीं,
पर नसबन्दी नि:शुल्क है।

यह अजीब सा मुल्क है,
निर्बलों पर हर शुल्क है।
अगर आप हों बाहुबली,
तो हर सुविधा नि:शुल्क है।

यह अपना ही मुल्क है,
कर कुछ सकते नहीं।
कह कुछ सकते नहीं।
पर बोलना नि:शुल्क हैं।

यह शादियों का मुल्क है,
दान दहेज भी खूब हैं।
शादी करने को पैसा नहीं,
पर कोर्ट मैरिज नि:शुल्क है।

यह पर्यटन का मुल्क है,
परिवहन भी खूब हैं।
पर बिना टिकिट यात्रा की तो,
रोटी कपड़ा नि:शुल्क है।

यह अजीब मुल्क है,
हर जरुरत पर शुल्क है।
ढूंढ ढूंढ कर देते हैं लोग,
सलाह नि:शुल्क है।

यह आवाम का मुल्क है,
रहकर चुनने का हक है।
वोट देने जाते नहीं,
पर मतदान नि:शुल्क है।

यह शिक्षकों का मुल्क है,
पाठशालाएं भी खूब है,
शिक्षकों को वेतनमान देने के पैसे नहीं,
पर खाना और पोशाक नि:शुल्क है।

त्रिलोक सिंह अधीक्षक
(सांख्यकी) मुख्यालय भोपाल

उम्मीद

फिर फूल बागों में आने लगे हैं
इन्हे यहाँ आने में जमाने लगे हैं।।

कल तक से मग्न राहगिरी में जो मुसाफिर
आज घर लौट कर फिर से आने लगे हैं।।

रात चाँदनी से ही करते थे गुफतगू जो।
आज दास्ताँ सबको अपनी सुनाने लगे हैं।।

बहुत तन्हा चेहरे देखे हैं मैनें भीड़ में
आज उनमें से कुछ चेहरे मुस्कुराने लगे हैं।।

गुज़र जो गया उस वक्त से निकल कर
उस वक्त को फिर से भुलाने लगे हैं।।

फिर फूल बागों में आने लगे हैं
इन्हे यहाँ आने में जमाने लगे हैं।।

इन्दु सिन्हा
आशुलिपिक ग्रेड-2

सपने देखते रहिऐ

सपने वों नहीं होते, जो सोते समय दिखते हों, बल्कि सपने तो वो होते हैं, जो इंसान को सोने न दे। जिन्हे सपने देखना अच्छा लगता है, उन्हे रात छोटी लगती है और जिन्हें सपने पूरा करना अच्छा लगता है उन्हे दिन छोटा लगता है। सपने वही सच होते हैं जिन्हे हमने जागी आँखों से देखा हो। दुनिया में जितने भी महान लोग हुए हैं उनकी सफलता के पीछे उनके सपनों का हाथ है। वो लोग मानवता के लिए वरदान साबित हुए है। बाबा साहब अंबेडकर,नेल्सन मंडेला, भगत सिंह जैसे लोग इस बात का उदाहरण हैं। सपने हमें बताते हैं कि प्रगति के पथ पर हमारी न्यूनतम उपलब्धियाँ क्या होनी चाहिए। हर व्यक्ति सपने में वो देखता है जो वो वर्तमान में नहीं है, किन्तु भविष्य में अवश्य होना चाहता है। यह सपना उसको भावी जिंदगी और उसके प्रयासों को उचित पथ पर ले जाता है। सपनों में देखा गया भविष्य हमें परिश्रम करने के लिए प्रेरित करता है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि सफलता और विकास की कहानी सपनों से शुरू होती है। चाहे वो पहिये का आविष्कार हो, आग की खोज हो या फिर राईट बंधुओं द्वारा वायुयान का आविष्कार हो इन सभी सफलताओं को जिस चीज़ ने मुकाम तक पहुँचाया है वो हैं अडिग सपने। अपनी शुरू की गई चीज़ को पूरा करना का सपना ही सफलता का मूल मंत्र हैं।

कभी-कभी सपनों का पूरा न होना निराशा पैदा कर देता है। निराशा के कारण हम हार मान कर बैठ जाते है और कोशिश करना बंद कर देते है जो कि सही नहीं है। एक सपने के टूटकर चकनाचूर हो जाने पर दूसरा सपना देखने के हौसले को ही जिंदगी कहते हैं। सपने देखने के साथ -साथ यदि अथक परिश्रम और लक्ष्य मे अडिग आस्था हो तो सपने अवश्य पूरे होते है। किसी ने खूब कहा है सपनों को सच करने का सबसे अच्छा तरीका है कि जाग जाओ।

इन्दु सिन्हा
आशुलिपिक ग्रेड

संविधान प्रदत मौलिक अधिकार के तहत शांतिपूर्ण प्रदर्शन और मानव अधिकार कैसे एक-दूसरे के पूरक हैं।

देश का संविधान हर नागरिक को अपने विचारों की अभिव्यक्ति के अधिकार के तहत शांतिपूर्ण धरना एवं प्रदर्शन का हक देता है। हालॉकि सविधान ही कुछ वाजिब कारणों से युक्तियुक्त प्रतिबंध भी लगा सकती है। कानून के दायरे में शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन का अधिकार लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकार है लेकिन इससे दूसरे के मौलिक अधिकार और मानव अधिकार प्रभावित नहीं होने चाहिए। लोकतांत्रिक देश में आवाज उठाने का अधिकार बेहद अहम है। सवाल यह नहीं है कि प्रदर्शन न्यायसंगत है या नहीं है बुनियादी सवाल ये है कि प्रभावित लोगों का अधिकर है कि वह लोकतंत्र में आवाज उठा सकते हैं, लेकिन धरना -प्रदर्शन की आड़ में हिंसा की इजाज़त कतई नहीं दी जा सकती । सुप्रीम कोर्ट ने भी घरना-प्रदर्शन से संबंधित दिशा-निर्देशें का कुछ मुख्य मामलों में उल्लेख भी किया है जिसके अंतर्गत उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि किया गया है।

विचार अभिव्यक्ति का अधिकार पूर्ण नहीं है बल्कि संविधान के अनुच्छेद-19 (2) में वाजिब प्रतिबंध है और इसके तहत सरकार धरना प्रदर्शन को सीमित कर सकती है या फिर उस पर रोक लगा सकती है यानी जैसे ही दूसरे के अधिकार प्रभावित होने लगे आपका

अधिकार सीमित हो जाता है। कानून के दायरे में धरना–प्रदर्शन हो सकता है लेकिन इस दौरान कोई कानून अपने ह ाथ में नहीं ले सकता है। जैसे अगर कोई रास्ता रोकता है, किसी सार्वजनिक संपति या प्रतिष्ठान या लोकहित से संबंधित अन्य सेवाओं को नुकसान पहुँचाता है तो इससे दूसरे का अधिकार प्रभावित होता है।

धरना–प्रदर्शन लोकतंत्र में असहमति जताने का एक स्वच्छ तरीका है। लेकिन पिछले कुछ समय के धरना–प्रदर्शनों का मूल्यांकन किया जाय तो यह प्रतीत होता है कि धरना–प्रदर्शन असहमति कम, गुस्सा और नफरत ज्यादा दिखाने के लिए किए जा रहे हैं। सार्वजनिक संपतियों को नुकसान पहुॅचाना, निर्दोष लोगों को मारना इन प्रदर्शनकारियों ने अपनी ताकत दिखाने का नया तरीका बना लिया है। शायद प्रदर्शनकारी ये भूल रहे हैं कि जिस लोकतंत्र के अंदर अपनी असहमति जताने के लिए उन्हें जो शांतिपूवर्क धरना–प्रदर्शन का अधिकार दिया गया है, हिंसक होने की स्थिति में सरकार इनका बलपूर्वक दमन भी कर सकती है। इतिहास गवाह है हिंसा से किसी भी समस्या का समाधान नहीं निकला है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में गॉधी जी ने जैसे अहिंसा का पाठ पढाया है, कम से कम इसी का अनुकरण इन प्रदर्शनकारियों को कर लेना चाहिए। अहिंसा का मार्ग बहुत कष्टकर है, हर कदम, हर रास्ते पर कांटे मिलेगें, रास्ते पर कांटे मिलेंगे, लेकिन अतत: इसके जो परिणाम आते है, उसका जीता जागता उदाहरण गॉधी जी का स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को देखा जा सकता है। स्वतंत्रता संग्राम में गॉधी जी हर कदम पर अहिंसा मार्ग का पालन किया, जो दूसरों के लिए अनुकरणीय है। गॉधी जी ने हिंसा और अहिंसा दोनों को एक दूसरे का पूरक बताया था। हिंसा को किसी भी रूप में जायज नहीं ठहराया जा सकता । गॉधी जी ने अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करते हुए ही देश को ब्रिटिश जैसे दमनकारियों से आजाद कराया था।

धरना प्रदर्शनों के दौरान यह भी देखा गया है कि प्रदर्शनकारी पुलिस बलों पर पत्थरों व गोलियों से हमला करते है। प्रतिक्रिया स्वरुप जब पुलिस कार्रवाई करती है तो कुछ मानवाधिकार के रक्षक मानव अधिकारों की दुहाई देने लगते हैं और उन्हें नासमझ और भटका हुआ इंसान बताया जाता है और तो और देश की मीडिया घरानों के द्वारा इस तरह से मीडिया ट्रायल किया जाता है जैसे वे वर्षों से इस देश में सताये जा रहे है। मिडीया हाउस और बुद्धिजीवियों के द्वारा देश के सरकारी संस्थानों की विश्वसनीयता को खत्म करने की कोशिश की जाती है।

मिडिया घरानों व उन बुद्धिजीवियों को सोचने की जरूरत है कि जिस मानव अधिकार की मॉग वो उन प्रदर्शनकारियों के लिए कर रहे हैं, वही मानवाधिकार उन पुलिस वालों का भी है। पुलिसवाले किसी अन्य ग्रह से नहीं आते है वे भी इसी देश व समाज के अभिन्न अंग हैं। सभी को आत्मरक्षा का अधिकार है चाहे वो कोई आम नागरिक हो या कोई पुलिसवाला। पुलिस का कर्तव्य होता है कि लोगों के बीच कानून व्यवस्था को बनाये रखा जाये। किसी भी तरह की अव्यवस्था होने की स्थिति में सख्ती से निपटे और वे एसा करते भी है। अपने कर्तव्यपालन में वे हर प्रतिकूल स्थिति में भी नागरिकों की सहायता व कानून व्यवस्था बनाने में तत्पर रहते हैं, फिर भी कुछ विशेष वर्ग के बुद्धिजीवियों द्वारा सोची समझी साजिश के तहत उन्हें दोषी के रुप में पेश किया जाता है। उनकी विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाता है और ये सिर्फ एक विभाग तक सीमित नहीं है देश के अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों पर भी इसी तरह की शंकाएं लोगो के बीच उनके द्वारा उत्पन्न की जाती है।

यह कहना उचित होगा कि अपनी असहमति जताने के लिए धरना–प्रदर्शन करना उचित भी, है और जरुरी भी लेकिन वो शांतिपूर्वक होनी चाहिए व बिना किसी हिंसा के। हिंसा होने की स्थिति में दूसरे के भी मानव अधिकारों का हनन होता है, जो स्वीकारयोग्य नहीं है।

आलोक कुमार

निरीक्षक

रतनगढ़- एक ऐतिहासिक स्थल

बुन्देलखण्ड के उत्तरीवृत में विन्ध्य पर्वतमाला के छोर पर रतनगढ़ स्थित है। वहां एक ऊंची चोटी पर देवी का मन्दिर है। मन्दिर के कुछ फासले पर एक चतुष्कोण चबूतरा है, जिस पर छोटी सी मढ़िया में स्फटिक खिलौना जैसा एक घोड़ा है। एक घोड़ा से कुछ बड़ा बाहर रखा है। उन्हें यहां की बोली में घुल्ला कहते है। देवी का नाम माडूला है, परन्तु अब रतनगढ़ की माता के नाम से प्रसिद्ध है। चबूतरा को 'कुंवर' का स्थान कहते है। लोकमान्यताएं तो अचरज भरी हैं, लेकिन वहां प्रत्यक्ष देखने के अनन्तर तर्क और अन्धविश्वास के प्रति उपेक्षा दोनों का अवसान हो जाता है। शेष रहता है चमत्कार जो साफ दिखाई देता है। दीपावली की दोज के दिन यहां लक्खी मेला लगता है। इस मेले का भाई दोज के दिन आयोजन एवं देवी और कुंअर के सन्दर्भ ऐतिहासिक है, किन्तु समय बीतते-बीतते दैवी के रुप में बदल चुके है। इतिहास के पृष्ठ हो गये स्मृतियां विलीन हो गई।

यही वह विलक्षण प्राकृतिक भूमि है, जहां के सूरमाओं ने महमूद गजनवी को भारतीय रणकौशल से परिचित कराया था, अलाउद्दीन खिलजी को मार्ग बदलकर दक्षिण की ओर जाने को विवश किया गया था और जहां बैठकर समर्थ गुरु रामदास ने छात्रपति शिवाजी को औरंगजेब के चंगुल से बाहर निकलने की योजना बनाई थी।

परमारों का पराक्रम

विन्ध्याचल पर्वतमाला की इस उत्तरी उपत्यका पर सर्वप्रथम परमारों ने राज्य स्थापित किया था। रतनगढ़ राजधानी थी। जिस स्थान पर रतनगढ़ के भग्नावशेष हैं, वहां पहुंचना बड़ा कठिन था। चारों ओर विन्ध्यश्रृंखला की आकाश चूमने वाली चोटियां प्रहरी का काम करती है। उपत्यका पर घना जंगल और वेग से बहने वाले नाले मनुष्य को वहां जाने से पग-पग पर व्यवधान खड़ा करते हैं। तीन ओर से रतनगढ़ का उतुंगा दुर्ग बहुत ही धने जंगलों से घिरा है। मार्ग में कई चोटियां लांघ कर वहां पहुंच पाते थे। एक ओर सिन्ध नदी गहरी, एक मील चौड़े पाट के साथ गढ़ की ढाल बनकर बहती है। वहां पहुंचने के लिए दो मार्ग हैं। एक दतिया से भगुआपुरा बेरछा होकर, दूसरा भरसेनी से जहां सिन्ध नदी पार कर जाते हैं। भरसेनी और बेरछा सिन्ध के तटवर्ती गांव हैं। यहां से रतनगढ़ साफ दिखने लगता है।

देवी और कुंवर

देवी का मन्दिर में पहले देवी की मूर्ति नहीं थी 17 वीं शताब्दी छत्रपति शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास जी ने वहां देवी जी की मूर्ति की प्रतिष्ठा की थी। औरंगजेब की गिरफ्त से शिवाजी को मुक्त कराने की योजना के कार्यान्वयन तक के लिए गुरु रामदास जी वहां रहे थे। शिवाजी भी आगरा से मुक्त होकर सर्वप्रथम रतनगढ़ आये थे। इससे पूर्व वहां केवल मढ़ी थी, जिसका कथानक बहुत रोचक है।

कहते है तेरवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अलाउद्दीन खिलजी ने इटावा होकर जब बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया उस समय रतनगढ़ मे राजा रतनसेन परमार थे। राजा रतनसेन के एक अवयस्क राजकुमार और एक राजकुमारी थी। कहा जाता है कि राजकुमारी का नाम माडूला था। अत्यन्त सुन्दर होने के कारण उसे पद्मिनी भी कहते है। खिलजी ने इसी को पद्मिनी प्राप्त करने के उद्देश्य से रतनगढ़ पर आक्रमण किया था। भंयकर युद्ध हुआ। रतनसेन मारे गये। राजकुल और क्षत्राणियों के साथ रतनगढ़ की हिन्दु महिलाओं ने रतनगढ़ के दुर्ग में जौहर व्रत में प्राणोत्सर्ग किये। राजा रतनसेन का जिस स्थान पर दाह संस्कार हुआ उसे आज चिताई कहते हैं। राजा के साथ अनेक योद्धाओं का भी दाह संस्कार किया गया था। इस युद्ध में रतनगढ़ के सूरमाओ ने लड़ते - लड़ते वीरगति प्राप्त की थी। जब एक भी न बचा तब राज कन्या तथा अबोध राजकुमार ने भी घास के ढेर में आग लगातार प्राण त्याग दिये थे। जहां राजकुमारी ने प्राणोत्सर्ग किया था उसी जगह एक छोटी सी मड़िया बना दी गई थी। मड़िया के पीछे पहाड़ की समानान्तर चोटी के छोर पर बना चबूतरा राजकुमार द्वारा प्राण त्यागने का स्थान है, जिसे कुअंर का चौतरा कहते हैं। कालान्तर में राजकन्या और राजकुअंर देवकोटि में माने जाने लगे और उनकी पूजा होने लगी। इन भाई-बहिन

की स्मृति में दीपावली की भाईदोज का लक्खी मेला लगता है। मड़िया में पहले देवी की मूर्ति नहीं थी तथा माडूला की मड़िया के नाम से प्रसिद्ध थी। समर्थ गुरू रामदास ने उस मड़िया में देवी की मूर्ति स्थापित की। तब से रतनगढ़ की माता के नाम से मन्दिर प्रख्यात हुआ। डाकुओं का वह महत्वपूण आश्रय रहा है। चम्बल सिन्ध घाटी का काई डाकू ऐसा नहीं हुआ जिसने वहां घण्टा न चढ़ाया हो बहुत घण्टे वहां अभी लटकते है, जिनपर डाकुओं के नाम अंकित हैं। कुछ को पुलिस अधिकारियों ने उतरवा कर जमा किया है। डाकू गिरोह रतनगढ़ के जगलों के रक्षक भी हैं अन्यथा अभी तक पूरा जंगल साफ हो जाता।

रतनगढ़ का परमार वंश

बुन्देलखण्ड में पवांया, करैश, केरूवा और बेरछा परमार राजाओं के ठिकाने प्रसिद्ध हैं। इन्हीं की एक शाखा करहिया में स्थापित हुई थी। प्रदेश के गृह राज्यमंत्री कैप्टन जयपाल सिंह करहिया बंश के परमार ठाकुर हैं। वस्तुत: परमार क्षत्रियों का बुन्देलखण्ड में आगमन बारहवीं शताब्दी से पूर्व राजस्थान और मालवा दोनों ओर से हुआ था। वे आबू पर्वत को ही अपना मूल स्थान मानते हैं, जहां उनके रजवाड़े थे। आबू पर्वत का सम्पूर्ण क्षेत्र परमारों के अधिकार में था, बल्कि उसके सुदूर क्षेत्रों में परमारों का प्रभुत्व हो गया था। विक्रम की ग्यारहवी शताब्दी में नाडौल के चौहानों से परमारों का संघर्ष हुआ। उसी के साथ अनहिलवाड़ा के चालुक्यों ने परमारों के ठिकानों पर आघात किया था। उसी दुतरफी मार से परमारों के पैर अखड़ गये तथा वे यत्र-तत्र पलायन करने को विवश हुए। चौहान राजा लुम्बा ने परमारों को माउन्ट आबू त्यागने को पुन: विवश किया।

बुन्दलेखण्ड के इतिहास में पवांया के परमार राजा पुण्यपाल (1231-56ई.) का नाम मिलता है, जिसे सोहनलाल बुन्देला की लड़की धर्म कुंवरि ब्याही थी। पुण्यपाल ग्वालियर के तोमर राजा का भानेज था। इससे विदित होता है कि परमार ग्यारहवीं शताब्दीं के अन्त में ही पवांया तक आ पहुंचे थे। पुण्यपाल पंवार के चार पुत्र थे रतनशाह जैतसिंह या जैतशाह, शंकरशाह और चन्द्रहंस। रतनशाह को करेरा की जागीर मिली। इनके बंशहर करेरा वाले कहलाये। जैतशाह को केरुवा, शंकरशाह को बेरछा की जागीर मिली। इनके बंशधर बेरछा वाले कहलाये। चौथे को घाटी मयापुर की बैठक मिली थी (बुन्देली वीर वार्ता पृष्ठ 88)। अस्तु बेरछा में सर्वप्रथम शंकरशाह ने स्वतंत्र अस्तित्व के साथ अलग छोटा सा राज्य स्थापित किया था। शंकरशाह के पुत्र थे रतनसेन। इन्हीं रतनसेन ने सिन्ध नदी के उस पार रतनगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया था। रतनसेन के बड़े भाई कनकसेन बेरछा में ही रहे। कनकसेन के पुत्र चन्द्रसेन की बेटी गढ़कुढ़ार के बुन्देला राजा मलखान 1468-1501 ई. को ब्याही थी। मलखान सिंह ने उनके सहायोग से पवांया को हस्तगत कर सिंध नदी जलप्रपात पर एक बारादरी का निर्माण कराया था। चन्द्रसेन के दो पुत्र हुए चिंतमणि और उद्यमणि। उदयमणि की प्रारम्भ से ही भक्ति में पूर्ण निष्ठा थी। अत: वे वृन्दावन चले गए थे और हितहरिवंश जी के ज्येष्ठ पुत्र वनचन्द्र जी के शिष्य होकर वहीं नेही नागरीदास के नाम से रहने लगे थे। इनकी भावज भागमती उच्चकोटि की भक्त भी और नागरीदास के साथ बरसाने में रहने लगी थी। भगवतमुदितजी ने अपने ग्रन्थ रसिक अनन्यमाल' (वि.सं. 1705)' में इनका और इनकी भावज का परिचय लिखा है कि राजा चिंतामणि अपनी रानी भागमती से असंतुष्ट थे रऔर व्रास देते थे। अत: भागमती अपने मायके ओरछा चली आई थीं, वहां से वे बरसाना गई थी। बृज साहित्य में नागरीदास का जन्म संवत 1590 के लगभग माना जाता है, जो सही नहीं है। यह वह समय है कि जब वीरसिंह जू देव प्रथम ने ओरछा पर आक्रमण किया था। केशवदास मिश्र ने इस घटना का उल्लेख वीरचरित्र में किया है। ''दोई गढ़ी लीने लैवरा एक वैरछा एक कहरा''। दतिया बड़ोनी की जागीर प्राप्त होने के बाद बीरसिंह जू देव का यह प्रथम सैनिक अभियान था। संभावना यह है कि बीरसिंहजू देव ने मधुकरशाह के देहावसना (1592ई.) के तुरंत पश्चात यह अभियान किया होगा। बेरछा के राजा चिंतामणि इसी युद्ध में मारे गये होंगे और उनके भाई नागरीदास तब बृन्दावन चले गये होंगे।

परमार और बुन्देला राजाओं के इतिहास के शोधकर्ताओं के लिए रतनगढ़ का मध्य क्षेत्र एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जितेन्द्र ठाकुर

आशुलिपिक

की स्मृति में दीपावली की भाईदोज का लक्खी मेला लगता है। मड़िया में पहले देवी की मूर्ति नहीं थी तथा माडूला की मड़िया के नाम से प्रसिद्ध थी। समर्थ गुरू रामदास ने उस मड़िया में देवी की मूर्ति स्थापित की। तब से रतनगढ़ की माता के नाम से मन्दिर प्रख्यात हुआ। डाकुओं का वह महत्वपूण आश्रय रहा है। चम्बल सिन्ध घाटी का काई डाकू ऐसा नहीं हुआ जिसने वहां घण्टा न चढ़ाया हो बहुत घण्टे वहां अभी लटकते है, जिनपर डाकुओं के नाम अंकित हैं। कुछ को पुलिस अधिकारियों ने उतरवा कर जमा किया है। डाकू गिरोह रतनगढ़ के जगलों के रक्षक भी हैं अन्यथा अभी तक पूरा जंगल साफ हो जाता।

रतनगढ़ का परमार वंश

बुन्देलखण्ड में पवांया, करैश, केरूवा और बेरछा परमार राजाओं के ठिकाने प्रसिद्ध हैं। इन्हीं की एक शाखा करहिया में स्थापित हुई थी। प्रदेश के गृह राज्यमंत्री कैप्टन जयपाल सिंह करहिया बंश के परमार ठाकुर हैं। वस्तुत: परमार क्षत्रियों का बुन्देलखण्ड में आगमन बारहवीं शताब्दी से पूर्व राजस्थान और मालवा दोनों ओर से हुआ था। वे आबू पर्वत को ही अपना मूल स्थान मानते हैं, जहां उनके रजवाड़े थे। आबू पर्वत का सम्पूर्ण क्षेत्र परमारों के अधिकार में था, बल्कि उसके सुदूर क्षेत्रों में परमारों का प्रभुत्व हो गया था। विक्रम की ग्यारहवी शताब्दी में नाडौल के चौहानों से परमारों का संघर्ष हुआ। उसी के साथ अनहिलवाड़ा के चालुक्यों ने परमारों के ठिकानों पर आघात किया था। उसी दुतरफी मार से परमारों के पैर अखड़ गये तथा वे यत्र-तत्र पलायन करने को विवश हुए। चौहान राजा लुम्बा ने परमारों को माउन्ट आबू त्यागने को पुन: विवश किया।

बुन्दलेखण्ड के इतिहास में पवांया के परमार राजा पुण्यपाल (1231-56ई.) का नाम मिलता है, जिसे सोहनलाल बुन्देला की लड़की धर्म कुंवरि ब्याही थी। पुण्यपाल ग्वालियर के तोमर राजा का भानेज था। इससे विदित होता है कि परमार ग्यारहवीं शताब्दीं के अन्त में ही पवांया तक आ पहुंचे थे। पुण्यपाल पंवार के चार पुत्र थे रतनशाह जैतसिंह या जैतशाह, शंकरशाह और चन्द्रहंस। रतनशाह को करेरा की जागीर मिली। इनके बंशहर करेरा वाले कहलाये। जैतशाह को केरुवा, शंकरशाह को बेरछा की जागीर मिली। इनके बंशधर बेरछा वाले कहलाये। चौथे को घाटी मयापुर की बैठक मिली थी (बुन्देली वीर वार्ता पृष्ठ 88)। अस्तु बेरछा में सर्वप्रथम शंकरशाह ने स्वतंत्र अस्तित्व के साथ अलग छोटा सा राज्य स्थापित किया था। शंकरशाह के पुत्र थे रतनसेन। इन्हीं रतनसेन ने सिन्ध नदी के उस पार रतनगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया था। रतनसेन के बड़े भाई कनकसेन बेरछा में ही रहे। कनकसेन के पुत्र चन्द्रसेन की बेटी गढ़कुढ़ार के बुन्देला राजा मलखान 1468-1501 ई. को ब्याही थी। मलखान सिंह ने उनके सहायोग से पवांया को हस्तगत कर सिंध नदी जलप्रपात पर एक बारादरी का निर्माण कराया था। चन्द्रसेन के दो पुत्र हुए चिंतमणि और उद्यमणि। उदयमणि की प्रारम्भ से ही भक्ति में पूर्ण निष्ठा थी। अत: वे वृन्दावन चले गए थे और हितहरिवंश जी के ज्येष्ठ पुत्र वनचन्द्र जी के शिष्य होकर वहीं नेही नागरीदास के नाम से रहने लगे थे। इनकी भावज भागमती उच्चकोटि की भक्त भी और नागरीदास के साथ बरसाने में रहने लगी थी। भगवतमुदितजी ने अपने ग्रन्थ रसिक अनन्यमाल' (वि.सं. 1705)' में इनका और इनकी भावज का परिचय लिखा है कि राजा चिंतामणि अपनी रानी भागमती से असंतुष्ट थे रऔर व्रास देते थे। अत: भागमती अपने मायके ओरछा चली आई थीं, वहां से वे बरसाना गई थी। बृज साहित्य में नागरीदास का जन्म संवत 1590 के लगभग माना जाता है, जो सही नहीं है। यह वह समय है कि जब वीरसिंह जू देव प्रथम ने ओरछा पर आक्रमण किया था। केशवदास मिश्र ने इस घटना का उल्लेख वीरचरित्र में किया है। ''दोई गढ़ी लीने लैवरा एक वैरछा एक कहरा''। दतिया बड़ोनी की जागीर प्राप्त होने के बाद बीरसिंह जू देव का यह प्रथम सैनिक अभियान था। संभावना यह है कि बीरसिंहजू देव ने मधुकरशाह के देहावसना (1592ई.) के तुरंत पश्चात यह अभियान किया होगा। बेरछा के राजा चिंतामणि इसी युद्ध में मारे गये होंगे और उनके भाई नागरीदास तब बृन्दावन चले गये होंगे।

परमार और बुन्देला राजाओं के इतिहास के शोधकर्ताओं के लिए रतनगढ़ का मध्य क्षेत्र एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जितेन्द्र ठाकुर

आशुलिपिक

हौसला

कभी टूटते है,
तो कभी बिखरते है,
इन मुश्किलों में ही तो,
हम इंसान ज्यादा निखरते है,
ख्वाहिशो के कैदी है,
हम को हकीकत सज़ा देती है,
आसन चीज़ों का शौक़ नहीं,
हमे मुश्किले मज़ा देती है,
ख्वाब टूटे है, लेकिन अभी,
होंसले हमारे जिंदा है,
हम तो वो है जिसकी मेहनत देख कर,
यह मुश्किले खुद पर शर्मिंदा है,
कौन सीखता है बातो से,
सबके लिये एक हादसा ज़रुरी है,
क्यूंकि ज़माने में आये हो तो,
जीने का हुनर बनाये रखना
हार जीत तो होती रहेगी ऐ दोस्त,
बस तू उम्मीद खुदा के साथ,
खुद पर भी बनाये रखना,

- शिवानी कीर
हवलदार

जब मैं बड़ा हो जाऊँगा

जब मैं बड़ा हो जाऊँगा,
खूले आसमान में उड़ जाऊँगा।
विदेश से ढेरों तोहफे लाऊँगा,
भूखों को भरपेट खाना खिलाऊँगा।
गरीब बच्चों को पढ़ाऊँगा,
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा।।

अपने प्यार से, दुनियां जीतकर आऊँगा,
सबको न्याय दिलाउँगा।
अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊँगा,
सबको खुशी दिलाऊँगा।।
भारत को नंबर बन बनाऊँगा
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा।।
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा,
खूले आसमान में उड़ जाऊँगा।

-ईशान पटेल (कक्षा-7)
पुत्र श्री मनोज कुमार (संयुक्त आयुक्त)

हमारे जवान

जय जवान, जय किसान,
इन जवानों को हमारा सलाम।
इनकी वजह से हम है स्वतंत्र,
वरना अभी तक होते गुलाम।।
इन जवानो को हमारा सलाम।।

जब हम खेल रहे होते हैं होली।
तब ये जवान बोल रहे होते हैं गोलियां की बोली।।
जिससे हमें कोई नहीं होती है हानि।
क्योंकि ये दे रहे होते हैं, भारत माता के लिए कुर्बानी।।
इनकी हिम्मत एवं ज़ज़बे के नाम।
इन जवानों को मेरा सलाम।।

इन्हीं जवानों में से एक थे,
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम।
जो सिखा गये हमें जीने का नया तरीका,
और दे गये मिसाइलों से अनूठा मुकाम।।
इनकी वजह से हम है गर्वान्वित,
ऐसे मिसाइल मैन को मेरा सलाम।।

अर्पित पटेल (कक्षा-8)
पुत्र श्री मनोज कुमार (संयुक्त आयुक्त)

तालियों की महिमा

जिन्दगी में हो मिठास, तो ताली मीठा स्वाद है।
ताली, ताली नहीं प्रगति का शंखनाद है।।
किसी सभा की सफलता की कसौटी है तालियाँ।
श्रद्धेय के प्रति निष्ठा व्यक्त करती है तालियाँ।।
साहित्यकार के क्लिष्ट साहित्य पर बजायी तालियां बुद्धिमता है।
संगीत समारोह में बजायी गयी तालियाँ संगीत प्रियता है।।

आजकल परिदृष्य कुछ इस कदर बदला है।
ताली बजाना जरुरी नहीं एक बला है।
इंसान भलें ही किसी से खाता हो गोलियाँ।
किन्तु जिन्दगी में हर दम बजाता है तालियाँ।।
बचपन में खुश होने पर किलकारी मारते हुये बजाता है तालियाँ।
बड़ा होकर मदारी के करतबों पर बजाता है तालियाँ।।
स्कूल-कॉलेज में ताली-बजा-बजाकर डरता-डराता है।
जब गृहस्थ बने तो बीबी-बच्चों को ताली बजाकर खुश कराता है।।
मंदिरों में भगवान से वर मांगने के लिए बजायी जाती है तालियाँ।
ऑफिस में बॉस को खुश करने के लिए बजायी जाती है तालियाँ।।
कितने ही रंको को राजा बनाया ताली ने।
कितने ही चमचों को अफसर बनाया ताली ने।।
राजनीतिक समारोह में स्वयं के लिए तालिवादक बुलवाते है नेता।
ताली बजवाकर बड़ो-बड़ो का कल्याण करवाते है नेता।।
नेता को जनता ताली बजाकर भाव खिलाती है
नेता करे शोषण, जनता सिर्फ ताली बजाते रहती है।
जिधर देखो उधर व्यावसायिक तालिबाजों का जमावड़ा है।
ताली के बगैर इंसान-इंसान नहीं, जैसे मुर्दा पड़ा है।।
इसलिए जमाने के रंगढंग, हमको इस तरह पहचानना है।।
बैठना है हरदम खामोश, किन्तु तालियाँ बजाते रहना है।।

एस.एम. लांजेवार
अधीक्षक

समय का सदुपयोग

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगी कब ?

समय वह अमूल्य धन है जिसे भगवान ने हर जीवित प्राणी को उपहारस्वरुप दिया है। भगवान के दिये हुए इस वरदान का बुद्धिमान एवं परिश्रमी इंसान उपयोग करते है और आलसी व्यर्थ गंवा देते है।

समय का पहिया सदैव चलता रहता है। गया हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता। कीमती है। उसका उपयोग करना सीखना ही उन्नति की कुंजी है। कहावत भी है– गया वक्त कभी हाथ नहीं आता।

समय का सदुपयोग करने के लिये, प्रत्येक कार्य को करने का समय निश्चित करना चाहिये। अगर हम सब काम समय पर कर लें तो पायेंगे कि हमारा जीवन कितना सुखद, शान्त और व्यवस्थित है। हमें कभी पछताना नहीं पड़ेगा। जो व्यक्ति समय का महत्व नहीं समझते, बेकार गप्पें मारते है, इधर उधर घूमते हैं, योजनाबद्ध तरीके से काम नहीं करते, वह जीवन की दौड़ में पिछड़ जाते हैं। उनका कोई काम समय पर पूरा नहीं होता। समय सूखी रेत की तरह हाथ से फिसल जाता है और वह हाथ मलते रह जाते हैं। समय निकल जाने के बाद हम कुछ नहीं कर सकते। तुलसीदास ने कहा है, का वर्षा जब कृषि सुखानी अर्थात खेती सूखने के बाद वर्षा का कोई महत्व नहीं होता इसी प्रकार समय निकलने के बाद हम कुछ नहीं कर सकते इसलिए हमें अपना हर काम समय पर समाप्त कर लेना चाहिए।

संसार के जितने भी महान व्यक्तियों से हम परिचित हैं उनकी जीवनचर्या बताती हे कि वह समय का मूल्य समझते थे। उन्होनें जीवन के प्रत्येक पल का उपयोग किया और समय ने उनको पूरा सम्मान दिया।

अत: हमें भी अपने सभी कार्य समय से पूरे करना चाहिये एवं समय का सदुपयोग करना चाहिये।

अनिल भोकरे
अधीक्षक

तत्व बोध

समाधान ?
समाधान क्या होता है।
चित्र एकाग्रता
चित्र की एकाग्रता को समाधान कहते है।
समाधान = सम + आधान

अपने मन में सम्यक स्थिति का अध्यन करना ही समाधान है। इसे वेदांत में समाधि भी कहा जाता है। एक+अग्रे = हमारे सामने एक ही वस्तु है। तो कुल मिलाकर अर्थ हुआ कि साधनो के करने से हमारे चित्र का अपने सामने की एक मात्र सत् – वस्तु में समाहित हो जाना यही है समाधान। मन का स्वभाव ही है चांचल्य साधरणतया थोड़ी देर तक अपने मन को एक ही वस्तु पर एक ही दिशा में टिक पाना हमारे बस की बात नहीं होती। इस चंचल मन को बार बार वापस ले आने की क्षमता का नाम है समाधान ।

प्रभात कुमार शर्मा
उपायुक्त, संभाग–4, भोपाल

बिना अभ्यास से विद्या नष्ट हो जाती है - अज्ञात

जी.एस.टी. दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के कुछ दृश्य

स्वतंत्रता दिवस - 2019

राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा 2019

हिन्दी पुस्तकालय का उद्घाटन करते माननीय सदस्य, सीबीआईसी श्री आर.के. बढ़थ्वाल एवं मुख्य आयुक्त एवं प्रधान आयुक्त महोदय साथ में अन्य अधिकारीगण

आयुक्तालय में वर्टिकल गार्डन का अनावरण करते मुख्य आयुक्त श्री वी.के. सक्सेना एवं प्रधान आयुक्त श्री संदीप श्रीवास्तव साथ में अन्य अधिकारीगण

खेलकूद प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए मुख्य आयुक्त एवं प्रधान आयुक्त महोदय।

आयुक्तालय में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान करते अधिकारीगण एवं कर्मचारी

योग दिवस 2019

स्वच्छता दिवस के चित्र

स्वच्छता दिवस के चित्र

आयुक्तालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों द्वारा बनाये गए चित्र

- मूर्ति पूजा -

प्रश्न – जब परमेश्वर सर्वव्यापी है तो क्या पत्थर की पूजा करना आवश्यक है।

उत्तर – इसमें हानि क्या है ?
जब हम नकली सेब देखते हैं तो हमें असली सेब का ध्यान आता है, आता है न ?
इसी प्रकार विभिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियाँ हमें परम सत्य का स्मरण कराती हैं। जब कोई भक्त श्रीराम या श्री कृष्ण की मूर्ति देखता है तब उसे उन वास्तविक अयोध्यावासी श्री राम का और द्वारकाधीश श्री कृष्ण का स्मरण होता है। चुंकि प्रभु सर्वव्यापी है वे पत्थर में भी है। जब हम पूजा इस भाव के साथ करते है कि उसमें परमेश्वर है तो हमारा मन एकाग्र होता है। इससे पत्थर पूजने वाले का भला होता है। मानसिक शांति भी प्राप्त होती है। जब आप अपने किसी प्रिय व्यक्ति द्वारा दिये गये रुमाल को देखते है तो क्या आप केवल उस कपड़े तथा उसके मूल्य को देखते हो ? तब आपको उस प्रिय व्यक्ति का स्मरण हो आता या नही। इसी प्रकार किसी अन्य बात से अधिक महत्व भावना का है। जब एक पत्थर पूजने वाला पत्थर को पूजता है तो वो एक साधारण पत्थर नहीं होता। महत्ता इसी संकल्प की है।

प्रभात कुमार शर्मा
उपायुक्त

सतत विकास

पृथ्वी ही एक ऐसा गृह है जिस पर जीवन संभव है क्योंकि जीवन को संभव बनाने वाले प्राकृतिक तत्व जैसे हवा, पानी उचित तापमान इत्यादि पृथ्वी पर ही पाये जाते हैं। आज मानव जाति पर्यावरण संसाधनों का अधिक से अधिक उपयोग कर आर्थिक विकास को महत्व दे रही है। आर्थिक विकास देश की उन्नति में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उत्पादन क्षेत्रो में विभिन्न प्राकृतिक संसाधनो की आवश्यकता होती है परन्तु इसी के परिणाम स्वरुप आज विश्व में प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनो की कमी जैसी प्रमुख समस्याऐं उत्पन्न हो रही हैं। जनसंख्या ज्यादा होने के कारण पृथ्वी पर प्राकृतिक संसाधनो का पुन: भण्डारन होने से पहले ही उनकी खपत होती जा रही है। अगर प्राकृतिक संसाधनो का उनके पुन भंडारण से पहले इसी तरह उपयोग होता रहा तो यह हमारे पर्यावरण का स्तर पूरी तरह बिगाड़ देगा। अत: आज सभी को सतत विकास पर जोर देने की आवश्यकता है।

प्रदूषण व प्रदूषण नियंत्रण को लेकर आज विश्व जागरुक हो रहा है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और भूमि प्रदूषण को रोकने हेतु कई प्रयास किए रहे है। हमें एक ऐसी विकास शैली को अपनाना है जिससे हम अपनी सारी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकें और आने वाली पीढ़ियो की आवश्यकताओं की पूर्ति को भी सुनिश्चित कर सकें। हमें प्रदूषण नियंत्रण, पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण के साथ साथ उपयोग हो रहे प्राकृतिक संसाधनो की पुन: पूर्ति के लिए भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

–प्राची गोयल
निरीक्षक

धर्म क्या है?

धर्म मूल रुप से संस्कृत भाषा का शब्द है। जिसका बहुत व्यापक अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

धर्म से आज कल हम सम्प्रदाय समझते है। जैसे हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि मगर संस्कृत में पंथो को सम्प्रदाय कहा जाता है।

एक मानव का धर्म क्या है ? वह खुद ही निर्धारित कर सकता है। उस पर किसी पर ज़ोर नहीं चलता। धर्म स्थिति के अनुसार बदलता रहता है।

मैं एक परिस्थिति का वर्णन कर रहा हूँ। उसके विषय में विचार करें।

एक पुरुष के पिता अपनी अंतिम सांस ले रहे है और वह पुरुष ही उसका एक मात्र सहारा है और वह अपने पिता की उनके अंतिम समय में सेवा कर रहा है। इसी बीच पड़ोस में एक नवयुवती के साथ कोई अत्याचारी अत्याचार करने का प्रयत्न कर रहा है और वह निसहाय लड़की मदद के लिये चिल्ला रही है।

इस अवस्था में उस पुरुष का धर्म क्या है। अपने पिता की उनके अंतिम दिनों में सेवा करना जो कभी भी स्वर्ग सिधार सकते है। या उस युवती की रक्षा करना जिसका पूरा जीवन शेष है।

आप बताये उस पुरुष का क्या कर्तव्य, धर्म है।

उस पुरुष का सर्वप्रथम धर्म युवती की रक्षा करना था, न कि मरणासन्न पिता की सांस टूटने की प्रतीक्षा करना क्योकि संस्कृत में रिलिजन के लिए **सम्प्रदाय** शब्द का प्रयोग होता है एवं धर्म को हम इंग्लिश में **मोरल ड्यूटी** कह सकते है।

संस्कृत में धर्म की परिभाषा है। 'धार्यांति सा धर्म' धारण करने योग्य आचरण ही धर्म है।

मनीष कुमार प्रसाद
निरीक्षक

जिम्मेदारी

औरत है तू, ये रब की मेहरबानी है,
तेरा औरत होना किसी की कमजोरी मत बनने देना,
यही तेरी जिम्मेदारी है।
रोकेंगे राह में कई हाथ तुझे,
नहीं रुकना तेरी जिम्मेदारी है,
सपने देखे हैं जो उसे पूरा करना तेरी जिम्मेदारी है।
हर कदम में गंदे लोग मिलेंगे।
उनसे लड़ना तेरी जिम्मेदारी है।
भटकायेंगे लोग तुझे, संवरना तेरी जिम्मेदारी है।
उनसे लड़ना तेरी जिम्मेदारी है।
जिम्मेदारी तेरे उपर पूरे घर की है।,
क्योंकि तू एक नारी है,
अलग-अलग हैं रुप तेरे कभी मां, कभी बेटी, कभी बहु,
यही तेरी फितरत सुहानी है।
औरत है तू ये रब की मेहरबानी है,
तेरा औरत होना किसी की कमजोरी मत बनने देना,
यही तेरी जिम्मेदारी है, यही तेरी जिम्मेदारी है।।

दामिनी रानी
आशुलिपिक वर्ग - ।।

आज ही क्यों नहीं?

एक बार की बात है एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर-सम्मान किया करता है। गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरुजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य अपने जीवन-संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता है। यहाँ तक कि वह अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है। और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बनाई। एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा-

''मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा दो दिन के लिए दे कर, कहीं दूसरे गांव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लुगा।''

शिष्य इस सुअवसर को पाकर बहुत प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते-करते बिना दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर-चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठाना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रात: काल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरुजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ जरुर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाजार से लोहे के बड़े-बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हे स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा की अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाजार जाकर सामान लेता आएगा, उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलुंगा परंतु भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी, और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नीद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था अब वह जल्दी जल्दी बाजार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरुजी मिल गए उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा लेकिन गुरुजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी हो का सपना चूर-चूर हो गया। पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी, उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा, वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा।

दोस्तों, जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं, पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं, इसलिए मैं यही कहना चाहता हूँ कि यदि आप सफल, सूखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते हैं तो आलस्य और दीर्घसूत्रता को त्यागकर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम और सतत् जागरुकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिये – आज ही क्यो नहीं ?

सलीम

आशुलिपिक वर्ग - ।।

भूल जाएं भूलने की आदत

कल जो लड़का मिलने आया था, उसका नाम याद नहीं आ रहा, अरे ! लगता हे मेरा मोबाइल ऑफिस में ही छूट गया, ओह, गैस पर दूध का बर्तन चढ़ा कर भूल गई... आपको भी अपने आसपास अकसर ऐसे जुमले सुनने को मिलते होंगे। अगर गौर किया जाऐ तो आजकल हम सब मोबाइल फोन के रिमाइंडर और फेसबुक के अपडेट्स पर निर्भर रहते हैं। परिचितों और दोस्तों का बर्थ-डे, बिजली, फोन और इंटरनेट का बिल जमा कराने की तारीख, करीबी लोगों के फोन नंबर्स जैसी छोटी-छोटी बातें पहले सभी को जुबानी याद रहती थीं पर अब हम एसी बातें याद रखने की जरुरत नहीं समझते। सभी आवश्यक सूचनाओं के लिए हम पूरी तरह टेक्नोलॉजी पर निर्भर हो गए हैं। यह आदत दिमागी सेहत के लिए बहुत नुकसानदेह साबित होती है इसकी वजह से ही हम रोजमर्रा की छोटी-छोटी जरुरी बातें भी भूलने लगते हैं।

बदल गया है फोकस भुलक्कडपन की एक बड़ी वजह यह भी है कि अब लोगों का सारा ध्यान फेसबुक और व्हॉट्सएप पर रहता है। इसलिए वे जरुरी बातों को भी गंभीरता से नहीं लेते। अब लोग उन बातों को भी याद रखने की कोशिश नहीं करते, जो उन्हें याद होनी चाहिए। पहले लोगों को ढेर सारे लैंडलाइन नंबर इसी वजह से याद रह पाते थे क्योंकि उनके पास इसके सिवा दूसरा कोई विकल्प नहीं था लेकिन अब सारी सूचनाओं को मोबाइल में सेव करने की सुविधा मौजूद है तो हम उन्हें याद रखने की जहमत नहीं उठाते। बात केवल फोन नंबर की नहीं है बल्कि यह आदत खतरनाक है। बच्चे को पढ़ाते समय अगर कोई बात भूल गए तो पल भर में गूगल पर सर्च कर लेते हैं लेकिन यह जरुरी नहीं है कि वहां से मिलने वाली हर जानकारी सौ फीसदी सही हो। खुद से ज्यादा इंटरनेट के सर्च इंजन पर भरोसा करने की आदत व्यक्ति को दिनोदिन लापरवाह बना रही है। हमारा दिमाग भी किसी मशीन की तरह होता है, उसका जितना अधिक इस्तेमाल होगा, वह उतनी ही तेजी से काम करेगा। ऐसा न करने पर मशीन की तरह ब्रेन भी सुस्त हो जाता है।

अच्छी सेहत के लिए आठ घंटे की पर्याप्त नींद लेना बहुत जरुरी है पर वैज्ञानिकों द्वारा किए गए रिसर्च से यह साबित हो चुका है कि महानगरों की युवा पीढ़ी रोजाना औसतन पांच छह घंटे से ज्यादा नींद नहीं ले पाती क्योंकि ट्रेफिक की वजह से उन्हें शाम को घर लौटने में अकसर देर हो जाती है। इसलिए रात को वे सही समय पर सो नहीं पाने लेकिन अगले दिन ऑफिस जाने कि लिए उन्हे जल्दी उठना पड़ता है । इसका सीधा असर उनकी स्मरण शक्ति पर पड़ता है। दिन भर में हम जो कुछ भी सीखते और याद करते है, रात को नींद में ही हमारा ब्रेन उन स्मृतियों को सुरक्षित रखने का काम करता है। अगर नींद पूरी न हो तो अगले दिन सुबह व्यक्ति छोटी-छोटी बातें भी भूलने लगता है।

यह सच है कि टेक्नोलॉजी पर बढ़ती निर्भरता की वजह से कुछ बातें भूल जाने पर भी हमें ज्यादा परेशानी नहीं होती लेकिन बातें याद रखने की कोशिश दिमागी सेहत के लिए हमेशा फायदेमंद साबित होती है। यहां कुछ ऐसे तरीके बताए जा रहे है, जिनकी मदद से लोगों और जगहों के नाम, प्रमुख तिथियों और कुछ जरुरी नंबरों को याद रखना बहुत आसान हो जाएगा।

नाम दोहराएं: जब आप किसी से पहली बार मिलते हैं तो उसका नाम सुनने के बाद मन ही मन दो-तीन बार उसका नाम दोहराएं। भले ही उसके साथ पांच मिनट की भी बातचित हो तो भी उस दौरान उसे हमेशा उसके नाम से संबोधित करें। इससे आपको उसका नाम आसानी

से याद हो जाएगा और उसे भी अच्छा महसूस होगा। शब्दों को इमेज में बदलें : कोई नया नाम सुनने के बाद उसके अर्थ या उससे जुडा कोई भी प्रसंग याद रखने की कोशिश करें। मसलन अगर किसी व्यक्ति का नाम पंकज है,इसके साथ यह भी याद रखें कि इसका मतलब कमल का फूल होता है तो आपको उसका नाम हमेशा याद रहेगा।

अपनाएं रोचक तरीके : हिन्दी के कुछ नाम ऐसे भी होते है, जिनका अंग्रेजी में मजेदार ढंग से अनुवाद किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी व्यक्ति का नाम लाल बहादुर सिंह है तो उसे आप मूल नाम के साथ रेड ब्रेव लॉयन के नाम से भी याद रख सकते है। किसी का पता याद रखने के मामले में भी आप यही फार्मूला अपना सकते है।

जरुरी है जुड़ाव : आजकल व्यस्तता इतनी बढ़ गई है कि पहली बार मिलने वाले लोगों के मोबाइल नंबर हम अपने पास उनके नाम से सेव कर लेते है। बाद में हमारे लिए यह याद करना मुश्किल हो जाता है कि अमुक नाम के व्यक्ति का नंबर हमने क्यों सेव किया था। ऐसे लोगों का नंबर सेव करने से पहले उनके नाम के साथ कोई ऐसा की-वर्ड जरुर लिखें ताकि आपकों तुरंत याद आ जाए कि वह मोबाइल नंबर हमने क्यों सेव किया था। मसलन आशीष नामक किसी व्यक्ति से अपने बच्चों के ट्यूशन के लिए बात की थी तो अपने मोबाईल में उसका नंबर ट्यूशन आशीष के नाम से सेव कर लें, बाद में आपको कोई परेशानी नहीं होगी। इसी तरह लोगों के शहर, कॉलोनी या उनके परिचतों के नाम को भी आप की वर्ड बना सकते है।

ऐसे याद रखें नंबर : यह ठीक है कि लोगों के पते और फोन नंबर आपके मोबाइल में सेव होते है। फिर भी इन्हें याद रखने का एक आसान तरीका यह भी है कि उन्हें संख्या की तरह नहीं बल्कि शब्दों में याद रखा जाएं मसलन किसी का मकान नंबर 315 है तो इसे थ्री वन फाइव के बजाय तीन सौ पंद्रह के रुप में याद रखना ज्यादा आसान होगा।

प्रमुख तिथियों के लिंक जोड़े : भले ही फेसबुक आपको याद दिलाए पर अपने प्रियजनों का जन्मदिन और शादी की सालगिरह जैसे खास अवसरों को खुद भी याद रखने की कोशिश करें। अकसर आपके कुछ दोस्तों या रिश्तेदारों का जन्मदिन एक दूसरे के आसपास पड़ता होगा। आप इसे ऐसे याद रख सकते है मई के महीनें में तीन लोगों का जन्मदिन है, सबसे पहले 2 तारीख को सौम्या का 5 को केतन का और अंत में 28 को आकाश का। इस तरह आप अपनों का बर्थडे कभीं नहीं भूलेंगे।

रहें व्यवस्थित : अकसर लोग अपनी चींजे इधर-इधर रखकर भूल जाते है। ऐसी समस्या से बचने के लिए जो सामान जहां से उठाएं, उसे वापस वहीं रखने की आदत डालें। अगर आप इन टिप्स को याद रखने की कोशिश में कामयाब होंगे तो जल्द ही भूलने की आदत भी भूल जाएंगे।

सुशील कुमार कटारिया
कर सहायक

अगर त्याग दो

अगर त्याग दो हर एक का दिल दुखाना, तो संसार का प्यार मैं तुमकों दूँगा।
अगर त्याग दो कर्म से पग हटाना, तो हर स्वप्न साकार मैं तुमको दूँगा।
तुम्हारे करों में है यह वरदान बल, बदल दो चाल भी काल की।
बदल दो जो चाहो नक्शा जँहा का। ध्वंस कर दो विष ग्रंथ व्याल की।।
अगर त्याग दो दीन निर्बल सताना। तो महाशक्ति विस्तार मैं तुमको दूँगा।
गर त्याग दो हर एक का दिल दुखाना, तो संसार का प्यार मैं तुमकों दूँगा।
अगर त्याग दो कर्म से पग हटाना, तो हर स्वप्न साकार मैं तुमको दूँगा।
क्यों जीते सहारे हो औरो के, भार बनते हो क्यों कर्म से भागकर।
बैर होता नहीं क्यों इस वायु को पर । आज जो द्वन्द है इस छुदा आग पर ।।
अगर त्याग दी आपरिग्रह का खजाना। तो अमिट शान्त संसार मैं तुमकों दूँगा।,
गर त्याग दो हर एक का दिल दुखाना, तो संसार का प्यार मैं तुमकों दूँगा।
अगर त्याग दो कर्म से पग हटाना, तो हर स्वप्न साकार मैं तुमको दूँगा।
क्या नहीं है दिया इस प्रक्रति ने तुम्हें । तेरे जीवन का घर इसमे श्रंगार है।।
इस विखंडन का एक दिन उठेगा कहर । वन जन-जन की प्रकृति का आधार है।।
अगर त्याग दो दूर प्रकृति से जाना। तों जीवन आजार सार मैं तुमको दूँगा।
गर त्याग दो हर एक का दिल दुखाना, तो संसार का प्यार मैं तुमकों दूँगा।
अगर त्याग दो कर्म से पग हटाना, तो हर स्वप्न साकार मैं तुमको दूँगा।

अमित शर्मा
कर सहायक

दो रिक्शेवाले

अरे साहब : उस रिक्शे पर मत बैठो, उसने चढ़ा रखी है, मुझे अपनी कंपनी के काम से मीटिंग करने के बाद मेट्रो स्टेशन तक जाना था. थोड़ी दूर का ही रास्ता था, लेकिन अनजान होने के कारण मैनें रिक्शा लेना ठीक समझा. शाम का समय था.

उस मरियल से रिक्शा वाले ने कातर दृष्टि से मुझे देखा.

रिक्शा पर बैठते समय एक भभका सा नाक पर लगा, पर चाहकर भी मैं रिक्शे से उतर नहीं पाया. कालोनी के अंदर की सडको पर वह अपनी तरफ से संभाल कर ही चलाता रहा, किन्तु मुझे उसको लगातार टोकना पड़ा .

धीरे भाई, बाएं ले लो, आराम से.....

कालोनी के बाहर रिक्शा में रोड पर आ गया था.

मेट्रो स्टेशन सामने ही दिख रहा था. मैं सावधानी वश उतर गया और उसको किराया देने के लिए जेब में हाथ डाला. संयोग से छुट्टे पैसे थे नहीं. पास की दुकानों पर भी पूछ आया, पर नहीं. मैंने उससे कहा कि मेट्रो स्टेशन तक आ जाओ, वहां अपना मेट्रो कार्ड रिचार्ज करा कर तुम्हें पैसे देता हूँ.

हम रॉन्ग साइड थे.

मैं फुटपाथ पर पैदल और वह मेरे पीछे रॉन्ग साइड से ही आने लगा. अचानक एक ट्रैफिक हवलदार प्रकट होकर बिना कुछ पूछे उसके रिक्शे की हवा निकालने लगा. दिल्ली में ट्रैफिक वाले ऐसे ही प्रकट होते हैं, मानो किसी ने उनका आहवान किया हो.

खैर, वह रिक्शे वाला सहम सा गया. दारू चढ़ी रखी थी, इसलिए अपना कुछ बचाव भी नहीं कर पाया. उसने रिक्शा वापस मोड़ लिया. मैं असहाय भाव से उसे देखता रहा.

मैं भी जल्दी से स्टेशन में कस्टमर केयर पर गया वहां भी लाइन लगी थी.

खैर, कुछ देर मैं पैसे छुटटे हो गए. मैं जल्दी से रिक्शे वाले की तरफ भागा कि उस बिचारे को पैसे तो दे दूँ.

लेकिन वह दूसरे रिक्शे वाले खड़े थे पर वह नज़र नहीं आया मैने एक रिक्शे वाले को उसकी पहचान बताई लेकिन वह कन्फयूज हो गया. फिर उससे पूछा कि रिक्शे, साइकिल की दुकान आस पास मैं है क्या ? पर दुकान दूर थी. मैंने उसे किराया पकड़ा दिया और उस रिक्शे वाले को देने की बात कही.

पास से दो-तीन और रिक्शे वाले आ गए और कहने लगे नहीं भैया जी आप इसे मत दीजिये, आप भले आदमी हो, पर यह नहीं देगा.

उस बिचारे ने सबकी बात सुनकर पैसा मेरे हाथ पर वापस रख दिया.

मैं ऊहापोह में पड़ गया और यह सोच कर कि देश में रिक्शे वाले अभी बेईमान नहीं हुए है, उसी के हाथ पर पुन: पैसे देते हुए कहा कि आप को मिल जाए तो उसे दे देना नहीं तो आप रख लेना.

वह नहीं ,नहीं करता रहा, लेकिन मैंने अधिकारपूर्वक कहा तो वह इंकार न कर सका, फिर मैं मेट्रो कि तरफ लौट पड़ा... पर बड़ी देर तक वह दोनों रिक्शे वाले दिमाग में घूमते रहे.

पता नहीं यह क्या था, मन कुछ हद तक ही सही, संतुष्ट था।

प्रभात खन्ना
अधीक्षक

सृजन

सृजन की अद्‌भुत शक्ति से,
मन मेरा विस्मित हुआ है।
जीवन में संतोष परम्‌
अब मेरे विकसित हुआ है।।

नन्हें नन्हें कदमों ने, मन की
धारा में हर्ष भरा।
उन हँसती आँखों के संग,
हँसता बीता ये वर्ष मेरा।।

सीमित इन दो हाथो में,
है असीमित संसार मेरा।
उस परम शक्ति को किन शब्दों में,
करुँ प्रकट आभार मेरा।।

मातृत्व का मुझको भान मिला,
माँ होने का अभिमान मिला।
अपनी ही इक छाया पाकर,
मानो हुआ स्वप्न साकार मेरा

मेरी जीवन बगिया में,
नव पुष्प ने जीवन पाया है।
सोचती हूँ तो लगताा है।
बचपन बिटिया बन आया है।।

- प्रियंका दुबे
अधीक्षक

भारत के समुद्र तट

मैंने पत्रिका के पिछले अंक में अपने दक्षिण प्रवास के दौरान वहां के विशालकाय ओर प्राचीनतम मदिरों के स्वयं के अनुभव का वर्णन किया था। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए पत्रिका के इन अंक मैं भारत के कुछ अद्वितीय समुद्र तटों का वर्णन कर रहा हूँ। प्राय: समुद्रतट जहन में आते हमें गोवा, मुंबई, पुरी, चेन्नई, कन्या कुमारी और रामेश्वरम के प्रसिद्ध बीच जैसे कोंडोलिन, बागा, जुहू, मरीना आदि याद आने लगते है।

परंतु मैं आपको भारत के कुछ ऐसे चुनिंदा समुद्र तटों के बारे में अपना अनुभव बताऊंगा जो शायद उतने लोकप्रिय तो नहीं है परंतु अपने आप में असाधारण, अद्वीतिय और बीच प्रेमियों के लिए वास्तव मे मनभावन और रूचिर है।

वरकला बीच केरल :- क्षेत्रीय लोग पापनाशम बीच भी कहते है। त्रिवेंदम से 40 कि.मी. उत्तर की ओर स्थित यह बीच समुद्र दक्षिण भारत का एक मात्र ऐसा बीच है जिसके सम्मुख खड़ी चट्टान स्थित है। आप जैसे ही बीच पर प्रवेश करते हैं सामने खड़ी चट्टान के सम्मुख आती

तेज लहरें स्वत: ही मन प्रसन्न कर देती है। इस प्राकृतिक सौंदर्य को यहां का अप्रदूषित स्वच्छ और शांत वातावरण और अधिक सुखद बना देता है। वरकला बीच पर 'सी बाथ' और 'सन बाथ' दौनो समान रुप से आनंदमय हे। सामने चट्टान होने के कारण यह स्थान समुद्र के ऊपर पैरांगलाइडिंग के लिए बहुत उपयुक्त है। पैराग्लाइडिंग करना यहां के अनुभव को और अधिक रोमांचक बना देता है।

ऑरोविले और पाराडाइस बीच, पॉडिचेरी :- भारत में अगर गोवा को 'किंग ऑफ बीचेस'' कहा जाता है तो पॉडिचोरी को बड़ी सहजता से हम 'क्वीन ऑफ बीचेस' कह सकते है। कारण है गोवा के समान ही विभिन्न प्रकार के बीच और गोवा की अपेक्षा बहुत कम भीड़-भीड़ और बहुत अधिक सुकूनमय वातावरण।

ऑरोविले बीच जाना जाता है स्वच्छ जल और और सुरक्षा के लिए कम ऊँची लहरों के कारण समुद्र में काफी दूर तक जाया जा सकता है और यही कारण के बच्चे यहां खूब मस्ती करते हैं और लोग परिवार के साथ अपना पूरा दिन व्यतीत करना पसंद करते है। जो लोग सरफिंग सीखना चाहते हैं। उनके लिए यह बीच सर्वोपयुक्त है।

पाराडाइस बीच - पॉडिचेरी का संभवत: सबसे व्यवसायिक बीच है। परंतु इससे बीच के सुंदरता और सुकून देने वाले वातावरण पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। यह एक टापू पर स्थित है जहां जाने के लिए जहाज / नाव का उपयोग किया जाता है। टापू पर संगमरमर समान सफेद रेत और नारियल के जंगल स्वत: ही फिल्मी बीचों की याद दिला देंगे।

गाँधी बीच कोल्लम - केरल में स्थित यह बीच अपनी ऊँची और तेज लहरों के कारण प्रसिद्ध है। बीच पर ढलान नहीं के बराबर और तेज लहरें तट पर टकराकर और ऊँची हो जाती है। यही कारण है के बीच पर स्नान करना सुरक्षित नही है । परंतु तट पर ही सुनियोजित तरीके से बना हुआ विशाल बाग इस जगह को दिलचस्प बना देता है। बाद में रेत पर बैठे हुए सामने अरब सागर से आती हुई विशाल लहरों को देखना और जब लहरें तट से टकराती हैं तो उस भारी ध्वनि को सुनना अपने आप में एक अद्वितीय अनुभव है। इस तट पर बिताई हुई शाम वास्तव में अविस्मरणीय है।

लाईट हाउस बीच, कोवलम - त्रिवेंदम्र से 20 कि.मी. दक्षिण में स्थित है कोवलम टाउन, मालाबार के सुंदरतम बीचों में से एक लाइट हाउस बीच है।

इस बीच पर नहाना अपेक्षाकृत अधिक आनंदमय है जिसका कारण है यहां के पानी का तापमान। सामान्य लहरों के साथ बीच में आती हुई ठंडी लहरों का अनुभव अप्रतिम है। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह जगह फोटोग्राफी के लिए एकदम सटीक है। बीच का घुमावदार आकार, ताड़ के वृक्ष और तट पर ही स्थित विशालकाय लाइट हाउस फोटोग्राफी के लिए स्वत: ही प्रेरित कर देता है।

आरंबोल बीच, गोवा - गोवा के भीड़ भाड़ वाले माहौल में यह बीच उतना व्यवसायिक नहीं हुआ है। यह बीच 'चाइल्ड लाइफ' और मशीन लाइफ के तालमेल का उम्दा उदाहरण है। समुद्र तट से सटे हुए जंगल इस बीच को आकर्षक और सुंदर बनाते है।

मरारी बीच, केरल - एलेप्पी से 10 कि.मी. दूरी पर स्थित है मरारी बीच/ इस बीच पर स्वर्णिम रेत देखने को मिलती है। बीच पर नारियल के वृक्षों की लंबी श्रृंखला आकर्षक लगती है। यह बीच नेशनल ज्योग्राफिक द्वारा किये गए सर्वे में विश्व के सर्वश्रेष्ठ हैमॉक बीचेस में अंकित किया गया है।

रोहित स्वर्णकार
कर सहायक

भोजन की थाली में महकते कीटनाशक

भारतीय दवा बाजार और चिकित्सा जगत इस दिनों प्रगति के नए आयाम तेजी से तय कर रहा है। इस क्षेत्र में न केवल नए उद्योग लगाए जा रहे हैं बल्कि अनुसंधान के विकसित स्वरूप को प्राप्त कर रोगों से लड़ने के नए तरीके ढूंढे जा रहे हैं। जाहिर है देश में रोग और रोगियों की संख्या में पिछले कुछ वर्षों में आश्चर्यजनक वृद्धि दर्ज की गई है। इस आपदा के अनेक कारण हो सकते हैं पर इसमें से एक वह भी है जिस पर हम यहां चर्चा करना चाहते हैं। दो वर्ष पूर्व सेंटर फॉर साइंस एण्ड एन्वॉयरानमेंट ने एक सनसनीखेज़ खुलासा किया था, कहा गया था कि पंजाब के किसानों के शरीर में कीटनाशकों के अवशेष खतरनाक स्तर तक मौजूद हैं। संस्था ने ये रिपोर्ट उस जांच के आधार पर प्रस्तुत की थी जिसमें पंजाब के केवल दो जिलों भटिंडा और रोपड़ के किसानों के रक्त नमूने लेकर उस का अध्ययन यह जानने के लिए किया कि किसानों के शरीर में कीटनाशकों का स्तर यदि है तो कितना ? याद रहे ये नमूने अक्तूबर माह में लिए गए क्योंकि अमूमन इसी माह में वहां के किसान उपज को जीवनदान देने के लिए अपने खेतों में कीटनाशकों की बारिश किया करते हैं। इस कीटनाशकों की दुर्गंध खेत तक सीमित न रहते हुए आसपास के पेयजल और आवासीय क्षेत्र को भी अपने चपेट में ले लेती है जिसके दुष्प्रभाव से बचना लगभग नामुमकिन होता है। संस्था की रिपोर्ट में उजागर किया गया कि किसानों के खून में छह से लेकर 15 प्रकार के कीटनाशकों के कण मौजूद हैं। इसमे भी, चौकाने वाली बात यह रही कि अमेरीकी किसानों की तुलना में इन कीटनाशकों का प्रतिशत 15 से 150 गुना अधिक पाया गया। हैरतअंगेज यह जानकारी मिली कि रक्त में डी.डी.टी. रूपी रसायन के अवशेष भी पाये गए जिनके उत्पादन को सरकारी आदेश और दस्तावेजों में भारत में 15 साल पहले ही प्रतिबंधित किया जा चुका है। रक्त में पाए जाने वाले डीडीटी का प्रतिशत अमेरिकी किसानों के रक्त में पाए जाने वाले प्रतिशत से 188 गुना अधिक पाया गया ।

यह थी भारत के एक या दो जिले के उस जहरीले रक्त की बात जो मासूम किसानों के जिस्म में रात-दिन गर्दिश कर गंभीर बीमारियों की जगह बना रहा है। अब खाद्यान्न में मौजूद रसायनों की चर्चा करें, दूध, जिसे पीने की आवश्यकता पर प्रचार माध्यम दिन-रात एक हुए हैं, में खतरनाक रसायनों बीएचसी, डीडीटी, डीडीई, के नमूने मिलने की पुष्टि हो चुकी है। याद रहे कि मां के दूध में भी घातक रसायन डी.डी.टी जैसे कीटनाशक के अवशेष पाए गए हैं। भैंस को इंजेक्शन लगाकर दूध निकालने की परम्परा कश्मीर से कन्याकुमारी तक आम जिन्दगी में शामिल हो चुकी है इंजेक्शन का असर दूध तक जरूर होता होगा। भेड़ के मांस को नरम रखने के लिए एस्प्रीन रसायन का छिड़काव किया जा रही है। कोल्ड ड्रिंक में कीटनाशकों की मौजूदगी भारत में तूफान ला चुकी है, यहां के बाजारों में विदेशी ठंडे पेय में कीटनाशक की मात्रा अमेरिका में मिलने वाले ठंडे पेय की तुलना में कई गुना अधिक सत्यापित की जा चुकी है। फलों को ताजा रखने के लिए इंजेक्शन के माध्यम से उसमें रसायन डाला जाता है और आइसक्रीम में झाग पैदा करने के लिए वाशिंग पाउडर का उपयोग होता है। हरे धनिया को ताजा बनाए रखने के लिए यूरिया और फॉलिडॉल रसायनिक पाउडरों का छिड़काव किया जाता है। कुछ डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों में संरक्षक के रूप में ऐसे नाइट्राइट का प्रयोग किया जाता है जिनके खाने से फूड प्वाइज़निंग होने की संभावना बन जाती है। गोभी को तरोताज़ा रखने के लिए एंडोसल्फॉन रसायन के घोल में मिलाया जाता है। हरी सब्जियों का हरापन बनाए रखने के लिए कृत्रिम रंग, या गाजर में पीला रंग मिलाया जाता है। सलाद को एकदम ताज़ा दिखाने के लिए सल्फर मेटा बाई सल्फाइड पाउडर का छिड़काव किया जाता है। इन खाद्यान्नों के उपभोग से व्यक्ति अनेक रोग से ग्रस्त हो जाता है। याद रहे एक सर्वे में कहा गया है कि दिल्ली के लागों के शरीर में कीटनाशकों की मात्रा दुनिया में सबसे अधिक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मत है कि विकासशील देशों में हर मिनट में एक व्यक्ति कृषि रसायनों के जहर से विषाक्त हो रहा है। अनुसंधान बताते है कि मनुष्य की आंतों में मैग्नीशियम और लेड जमा होने की वजह से घाव बनना शुरू जो जाता है और पीले रंग के उपभोग से श्वांसरोग उत्पन्न हो जाते हैं हाल ही मे चीन में बनाए गए टूथपेस्टों में एक जहरीला रसायन पाए जाने के बाद अमेरिका स्वास्थ्य अधिकारियों ने उपभोक्ताओं को इसका उपयोग न करने का सुझाव दिया है। जांच में पता चला है कि इन टूथपेस्टों में जहरीला रसायन डाइऐथिनीन ग्लाइकोन मौजूद है जो बच्चों और वयस्को के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो सकता है।

देश में कीटनाशक का परिचय सर्वप्रथम 1947 में डीडीटी नामक उस खतरनाक रसायन के रूप में हुआ था जिसे तब मलेरिया की रोकथाम के लिए धड़ल्ले से धूम-धाम से गांव-गांव छिड़का गया था। विश्व के अनेक देश अब इस भयानक कीटनाशक को अपने यहां प्रतिबंधित कर चुके है क्योंकि इसके घातक परिणाम आत्यधिक निराशाजनक रहे हैं। इस कीटनाशक की विशेषता है कि प्रयोग करने के

उपरांतअनेक वर्षो तक यह मिट्टी और पर्यावरण में अपना प्रभाव बनाए रखता है। कहा जाता है कि प्रतिबंध के बाद भी आज इस कीटनाशक का व्यापार पचास अरब डालर प्रतिवर्ष है। अनेक प्रदेशों से भले ही कीटनशकों के कारण आत्महत्या की खबरें आती हों हमारा मध्यप्रदेश ही प्रतिवर्ष लगभग 250 करोड़ से अधिक के कीटनाशकों का व्यापार करता है । ये वह अनुमानित राशि है जिसके बिल खरीदारों को दिए गए हैं या बैंक के माध्यम से जिन्होने ऋण प्राप्त कर उन्हें प्राप्त किया है इससे कहीं अधिक राशि के कीटनाशक बिना बिल के प्रदेश के किसान खरीदते रहे हैं। प्रदेश में इनका प्रयोग सबसे अधिक सब्जी के लिए किया जाता है फिर कपास और सोयबीन के लिए।

देशभर में कीटनाशकों के दुष्परिणाम को पहचानते हुए केन्द्र सरकार कोडेक्स कमेटी के प्रावधानों को कड़ाई से लागू कर रही है, याद रहे कोडेक्स कमेटी एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है जिसका कार्य खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों की मानक तय कर लागू करवाना है। कोडेक्स कमेटी ने भारत में प्रयोग किए जा रहे उन 36 कीटनाशकों को भी सूची में लाने की घोषणा की है जो अभी तक उस सूची में नही थे। इनमें से छह कीटनाशक सिर्फ चाय की खेती में इस्तेमाल किए जा रहे हैं। ज्यादा प्रचलित खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों की न्यूनतम सीमा तय करने के लिए हालांकि देश में मानक बने हैं लेकिन उनका पालन कुछ बड़ी डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ बनाने वाली कंपनियों द्वारा ही किया जा रहा है। बाकी जो खाद्य पदार्थ बिक रहे हैं, उनमे इस सीमा का पालन नहीं हो रहा है ओर न ही सरकार के किसी महकमे को उनकी जांच-पड़ताल की फुर्सत है। देश में इस समय लगभग 188 कीटनाशकों का उपयोग हो रहा है। जिनमें से 36 कोडेक्स कमेटी में अब तक नहीं थे पर उन्हें अब इस सूची में डाल दिया गया है।

प्रश्न है कि कीटनाशकों के नियंत्रण या उपयोग का निर्धारण कैसे हो ? इस सम्बंध में सीएसई की सुनीता नारायण जागरूकता को ही सबसे बड़ा हथियार मानती है। जबकि प्रख्यात पर्यावरणविद् **अनुपम मिश्र** सरकार और समाज दोनो के परसपर सहयोग की जरूरत पर बल देते हैं वे कहते हैं कि ऐसा तो एक दिन होना ही था, यह कैसे मुमकिन है कि जो जहर दो या ढ़ाई दशक से हमारी मिट्टी पानी और परिवेश में फैलाया जा रहा हो वह हमारे खून तक न पहुंचे ? सरकार को चाहिए कि सबसे पहले वह कैंसर के मरीजों की मदद को आगे आए फिर इसके कारणों की गंभीरतापूर्वक जांच-पड़ताल करे। कृषि विशेषज्ञ देविंदर शर्मा कीटनाशकों पर पूर्णत: प्रतिबंध की अपील करते हैं । वे कहते हैं कि कुल कीटनाशकों का 30 प्रतिशत और 55 प्रतिशत पिछले 40 वर्षों से क्रमश: धान और कपास के खेतों में छिड़का जा रहा है। श्री शर्मा के अनुसार विदेशों के जिन धान खेतों में कीटनाशकों को प्रयोग कम किया गया या नहीं किया गया वहां कीड़े भी कम पाए गए और पैदावार भी अधिक मिली, वहीं जिन कपास खेतों में कीटनाशक डाला गया वहां कीड़े भी कम पाए गए और पैदावार भी अधिक मिली, वहीं जिन कपास खेतों में कीटनाशक डाला गया वहां पैदावार भी घटी, किसान ऋणी बना और पर्यावरण बर्बाद हुआ। 1960 में कपास की फसल पर 6 प्रकार के कीड़े पाए जाते थे इनके कीड़े पाए जाते थे इनकी तादाद बढ़कर 60 तक पहुंच गई है। श्री शर्मा कीटनाशकों पर पूर्णत: प्रतिबंध की वकालत कर कहना चाहते हैं कि यदि इस नुकसान का असर हमारी अर्थव्यवस्था पर पड़ा तो भी वह हमारे पर्यावरण के नुकसान और मानव शरीर पर हो रहे दुष्परिणाम से कहीं कम ही होगा।

कीटनाशक उत्पादक इन सारे दावों, तर्कों और दलीलों को नकारते हैं कि केवल गिने-चुने नमुने लेकर किसी उत्पाद की गुणवत्ता पर संदेह करना उच्च और अतिविकसित अमेरिकी शोध पर अंगली उठाना है। डीडीटी मानवीय खून के लिए खतरनाक नहीं है, आर्गेनोफॉस्फेट लंबे समय तक शरीर में नहीं रहते, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये कीटनाशक बेहद घातक हैं और इनके कारण कैंसर जैसे घातक रोग हो सकते हैं। उत्पादकों ने कई खरतनाक और प्रतिबंधित कीटनाशकों का उत्पादन बंद कर ऐसे कीटनाशकों का उत्पादन शुरू किया है जो कम समय तक मिट्टी या वातावरण में रहकर स्वत: ही नष्ट हो जाते हैं, पर यह भी याद रखा जाना चाहिए कि उत्पादकों ने इनकी मारक क्षमता को कहीं अधिक उन्नत और सांद्रता प्रदान की है जो पहले के कीटनाशकों की तुलना में अधिक जहरीले और घातक साबित हो रहे हैं। ऐसे परिवेश में जबकि कीटनाशक, खाद्य पदार्थों के साथ खुशबूदार व्यंजन का रूप धारण कर, हमारी थाली तक पहुंच कर हम पर हमला करें या हमारे शरीर में रक्त का रूप धारण कर दौड़ना चाहते हैं, कम से कम आपको होशियार रहने की जरूरत है ताकि आप उपयोग से पूर्व उन्हे साफ या निष्प्रभाव कर प्रयोग कर सकें। केवल यही एक रास्ता है जो इस अप्रत्यक्ष हमले से हमें बचा सकता है। (दिनांक 12-09-2020)

शब्बीर कादरी
पिता - डॉ. (श्रीमती) जूही कादरी

सात समन्दर पार हिन्दी पत्रकारिता का परचम

यह सुखद आश्चर्य है कि हिन्दी पत्रकारिता विदेशी धरती पर एक शतक से भी अधिक समय से अपने अस्तित्व को सुरक्षित किए हुए है। विदेश में हिन्दी पत्रकारिता का परिचय सर्वप्रथम लंदन में कालाकांकर परेश रामपाल सिंह ने वर्ष 1883 में '**हिन्दुस्तान**' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका से कराया था जो तीन भाषाओं पर केन्द्रीत एक हिन्दी पत्रिका थी। बाद में यह पत्रिका जब सफलता के सोपन तय करने लगी तो वर्ष 1885 में साप्ताहिक रूप में ओर आगे चलकर वर्ष 1887 में दैनिक समाचार पत्र में बदल गई। इसी के साथ प्रारंभ भी हुआ विदेशी धरती पर हिंदी पत्रकारिता की यात्रा कई देशों में जैसे इंग्लैंड, अमेरिका,चीन,जापान,दक्षिण अफ्रीका, नार्वे, त्रिनिडाड एवं टोबेगो, सूरीनाम, फीजी, बर्मा, मारीशस, नेपाल सहित अनेक देशों में आज भी जारी है ओर अपनी जड़े नित्यप्रति मजबूत कर रही है। ये पत्र-पत्रिकाए कहीं निजी प्रयासों से कहीं संस्थाओं द्वारा और कहीं स्थानीय प्रशासन के माध्यम से प्रकशित की जाती हैं। इनमें कुछ की प्रसार संख्या यदि कुछ सौ तक है कुछेक की संख्या कई हजार तक भी जा पहुंची है। वहां कुछ पत्रिकाओं का उददेश्य यदि हिन्दी का प्रचार प्रसार रहा है तो कुछ का भारतीय संस्कृति का परिचय ओर कुछ का स्थानीय संस्कृति के दर्शन से संबंध रहा है। आईये, कुछ उन देशों की चर्चा भी कर लें जहां हिन्दी अपनी उपस्थिति को लेकर गतिमान है। सर्वप्रथम इस संदर्भ में अमेरिका में हिन्दी की चर्चा कर लें ।

अमेरिका : यहां से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं में 'सौरभ' 'विश्वा' ओर 'विश्व विवेक' नाम प्रमुखता से लिए जा सकते हैं विश्व विवेक त्रैमासिक पत्रिका है इसके प्रत्येक अंक में 32 से छत्तीस पृष्ठ रहते हैं इस पत्रिका का प्रकाशन 1992 से अद्यावधि नियमित रूप से हो रहा है। भारतीय पाठकों के लिए यह रियायती मूल्य पर उपलब्ध रहती है। सेंट जेवियर विश्वविद्यालय, लूईजियाना के गणित के प्रोफसर डा. भूदेव शर्मा इसके संपादक है इसमें कविताओं, लेखों ओर कहानियों का समावेश होता है। इसी प्रकार अन्य पत्र-पत्रिकाओं का भी अमेरिका के कई भागों से प्रकाशन हिंदी से जारी है।

चीन : चीन में भी हिंदी पत्रकारिता को कई दशक बीत चुके है कुछेक पत्रिकाओं में दो पत्रिकाएं प्रमुख हैं एक पेईचिंग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से प्रकाशित अनियतकालिक 'भित्ती पत्रिका' है जबकि दूसरी 'चीन सचित्र' है। पूर्व में चीन लोक गणराज्य की सरकार ने 1950 के जुलाई माह के दौरान देश में ही वितरित करने के लिए चीनी भाषा में जन सचित्र का प्रकाशन हुआ। तभी हिंदी, अंग्रेजी ओर रूसी भाषाओं मे भी इसके संस्करण का प्रकाशन किया गया । यद्यपि हिंदी संस्करण का प्रारंभ वर्ष 1957 में हुआ। इसका पहला अंक जुलाई 1957 में प्रकाशित किया गया। वर्तमान में यह पत्रिका संसार की पन्द्रह भाषाओं जैसे चीनी, तिब्बती हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, जापानी, कोरियाई, रूसी, स्पेनी, अरबी, स्वाहिली, इतालवी, और स्यामी के अतिरिक्त अनेक विदेशी भाषाओं में प्रकाशित हो रही है। आकर्षक ओर चिकने कागज पर 48 पृष्ठों में प्रकाशित इस रंगीन पत्रिका को चित्रों से भी सजाया जाता है। चीन में हुए आर्थिक तथा सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक विरासत तथा नव-निर्माण संबंधी लेखों के माध्यम से चीन की बहुआयामी तस्वीर प्रस्तुत करना ही इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है। इसमें देश विदेश की सामयिक घटनाओं का भी सामावेश होता है ओर कभी कभी भारत संबंधी लेख भी छापे जाते हैं। **चीन सचित्र** नामक इस पत्रिका में हिंदी सम्पादक के अलावा एक हिंदी सलाहकार ओर अनुवादक भी होता है सलाहकार भारतीय ओर बाकी सब स्थानीय चीनी लोग होते हैं।

त्रिनिदाद ओर टोबेगो : दो द्वीपों से बना यह देश त्रिनिदाद ओर टोबेगो कहलाता है। त्रिनिदाद का क्षेत्रफल 1864 वर्गमील जबकि टोबेगो का क्षेत्रफल 116 वर्गमाल है। त्रिनिडाड का नामकरण यहां स्थित तीन पर्बतों के कारण हुआ है जिन्हें थ्री सिस्टर्स भी कहा जाता है। यहां के मूल निवासी आरावाक्स भी कहलाते हैं। भारत की खोज में निकला कोलम्बस भूल से इसे भारत समझ बैठा। तब शायद किसी ने सोचा भी न हो बाद में ये छोटे-छोटे देश वेस्ट इंडीज कहलाए । टोबेगो को लोग प्राय: राबिन्सन द्वीप भी कहते हैं कहा जाता है कि क्रूसी कभी यहां अकेला छूट गया था यहां के मूल निवासी तंबाकू पैदा किया करते थे इसलिए भी यहां का नाम टोबेगो के रूप में जाना गया । त्रिनिडाड एंड टोबेगो में हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभ वर्तमान शताब्दी के पहले दशक से प्रारंभ होता है। 1907 में मार्टन ओर लाल बिहारी ने

भारत से हिंदी की पुस्तकें मंगवाने के साथ ही चार पृष्ठों का हिंदी बुलेटिन प्रकाशित करना प्रारंभ किया। चौथे दशक में यहां से काहेनूर नाम से एक दैनिक पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ जिसमें धार्मिक रचनाओं सहित स्थानीय समाचारों का समावेश होता था आगे चलकर वर्ष 1950 में आर्य समाज ने 'संदेश' नामक पत्रिका का प्रकाशन त्रिनिडाड ओर टोबेगो से प्रारंभ किया। जिसके संपादक श्री एल मिश्र थे। हिंदी पत्रकारिता का दौर आगे वर्ष 1968 में ज्योति पत्रिका के प्रकाशन से प्रारंभ हुआ जिसका प्रवेशांक यहां निकाला गया । पहले इस पत्रिका का दायित्व हिंदी पत्रिका शिक्षा संघ द्वारा होता रहा बाद में भारतीय विद्या संस्थान के द्वारा इसका प्रकाशन जारी रखा गया। यह एक द्विभाषी पत्रिका है जिसमें हिंदी ओर अंग्रेजी में रचनाओं का प्रकाशन किया जाता है । कुल मिलाकर यहां हिंदी पत्रकारिता ने अभी तक अपने आप को बनाए ओर बचाए रखा है जो हिंदी की ही जीत कही जा सकती है।

सूरीनाम में हिदी पत्रकारिता : सूरीनाम पूर्व में गयाना का ही एक भाग था मूल रूप से 1814 में गयाना तीन भागों में बंट गया जिसे फ्रेंच गयाना, ब्रिटिश गयाना और डच गयाना कहा गया। 25 नवंबर 1975 को स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात डच गयाना का नाम सूरीनाम हो गया। सूरीनाम में संसार की लगभग सभी जातियों के कुछ लोग रहते हैं। सूरीनाम में रहने वाले भारतवंशियों ने यहां 1873 में अपना पहला कदम रखा था ओर वे शर्तबंद मजदूर के रूप में वे 1916 तक भारत से यहां आते रहे। यद्यपि ये भारतवंशी पांच वर्ष के अनुबंध पर आते रहे पर बाद में वे यहीं जमीन खरीदकर कृषि इत्यादि का व्यवसाय करने लगे। सूरीनाम पहंचे भारतीयों में उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम उत्तरप्रदेश ओर कुमाउं इत्यादि के लोग अधिसंख्य थे। ये भारतीय, भोजपूरी,अवधी, खड़ी बोली ओर पहाड़ी भाषा इत्यादि बोलते थे। पर वे हिंदी पर अपनी संस्कूति ओर धर्म के साथ मजबूत से जड़े रहे। पूर्व में सूरीनाम के लोग दो भाषाओं पर ही थे एक फ्रेंच दूसरी हिंदी। सूरीनाम में हिंदी के प्रसार-प्रचार में अप्रवासी भारतीयों की स्वैच्छक संस्थाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1910 में स्थापित पहली संस्था सूरीनाम प्रवासी संस्था इसमें प्रमुख है। सूरीनाम में कार्यरत सभी हिंदी संस्थाओं का कार्य भारतीय संस्कृति का संरक्षण और अपने धर्म की रक्षा करना था। यहीं से वर्ष 1944 में संस्थाओं द्वारा 'सनातन धर्म' मासिक का प्रकाशन किया गया। पांचवें, छठवें ओर सातवें तथा आठवें दशक भी कई संस्थाओं द्वारा अलग- अलग पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया। कुछ मिलाकर अभी तक अनेक पत्रिकाएं हिंदी भाषा में भारतीयों ओर उनकी संस्कृति तथा भाषा के सरंक्षण तथा संवर्धन में सकारात्मक रूप से सूरीनाम में कार्यरत हैं।

नार्वे में हिंदी पत्रकारिता : यहां हिंदी पत्रकारिता का इतिहास अत्यधिक प्राचीन नहीं है। यूं तो यहां कई पत्रिकाऐं जिनमें 'परिचय' 'पहचान' 'स्पाइल' 'त्रिवेणी' 'शांतिदूत' 'अप्रवासी टाइम्स' आदि पत्रिकाऐं प्रकाश में आई पर वर्ष 1993 से त्रिवेणी नामक द्वैमासिक पत्रिका में स्थानीय समाचारों सहित हिंदू धर्म विषयक आलेख प्रकाशित किए गए। 'शांतिदूत' नामक पत्रिका जिसका प्रकाशन वर्ष 1990 से नार्वे में हिंदी में प्रारंभ हुआ एक उल्लेखनीय पत्रिका है जिसके 52 पृष्ठीय द्वैमासिकी है । इस में हिंदी के 33, अंग्रेजी के नौ तथा नार्वेयाई भाषा के छह पृष्ठ होते हैं।

इस प्रकार रूस, स्पेन ओर जापान सहित देशों में आज हिंदी भाषा पत्रकारिता के माध्यम से अपनी संस्कृति के संरक्षण में प्रगति कर रही है। आशा है एक दिन विश्वभर में हिंदी पत्रकारिता सम्मान ओर प्रगति के अनेक सौपान तय कर भारत का मान विश्वभर में प्रतिष्ठित करेगी।

सोंधी सुगंध, मीठी सी भाषा
गर्व से कहो हिंदी है मेरी भाषा

डॉ.जूही कादरी
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कैंसरः-जिंदगी से हार, फिर एक नई शुरुआत

ज़िन्दगी को अगर सच्चे अर्थों में समझना है तो एक बार कैंसर हॉस्पिटल के किसी वार्ड या गलियारे से होकर हमें जरूर गुजरना चाहिए, जहॉ जिन्दगी की सारी उपमाएँ मौत के रूपकों से हार जाती हैं, और तब इन हॉस्पिटल की बड़ी-बड़ी भव्य इमारतें हमारे मन को ढाँढस नहीं बँधाती बल्कि जिन्दगी पर मौत का निर्मम अट्टहास लगती हैं. यह बात मैं अपनी निजी अनुभूति से कर रहा हूँ। मैं मानता हूँ 'विदा' जिसमें पुर्नवापसी की सम्भावना न हो ज़िन्दगी के शब्दकोश का सबसे कठोर और निर्मम शब्द है. लेकिन यह भी सच है कि ज़िन्दगी में सिवा 'मृत्यु' के और कुछ भी निश्चित नहीं है. हम हर वक्त कितनी सारी योजनाओं में जीते हैं, भविष्य के कितने मंसूबे सँजाते हैं, लेकिन ढाई आखर की 'मृत्यु' एक पक्रवात की तरह आती है और ज़िन्दगी की सब नियमितता तबाह करके चली जाती है. और फिर जीवन खोते रहने की एक सतत प्रक्रिया सा प्रतित होता है. कहते हैं दुर्भागय से युद्ध सम्भव है लेकिन उसे पराजित नहीं किया जा सकता । इंसान की हैसियत विधाता के आगे तृण जितनी भी नहीं है. नियति ही अटल सत्य है. ज़िन्दगी का यात्रा एक अनिश्चित सफर है. इस सफर में कोई यूँ ही अचानक क्यूँ चल देता है ज़िन्दगी के बीच से ? वक़्त से पहले क्यूँ बुझ जाती है बाती ? ज़िन्दगी ऐसे कइ सारे अनुत्तरित सवाल लिए आगे बढ़ती रहती है. अक्सर हम अपने एकदम नजदीक वाले व्यक्ति के बारे में उऐसा हमारे साथ ही रहेगा. लेकिन ऐसा होता नहीं है. अचानक ऐसी कई बातें और घटनाएँ होने लगती हैं कि हमें समझ ही नहीं आता कि क्या करना चाहिए और ज़िन्दगी के इस द्वंद्व में कभी-कभी इतनी देर हो जाती है कि हमारे हाथ में करने लायक कुछ बचता ही नहीं. कैंसर पता चलने और फिर उसके बाद कुछ ऐसा ही. घटितहुआ. अत्यधिक तेजी से उसकी बीमारी बढ़ी और उस बीमारी ने उसे हमसे छीनलिया. ऐसा भी कभी हो सकता है, यह विचार तक कभी मन में नहीं आया था. कभी नहीं सोचा था कि इतना बड़ा घाटा ज़िन्दगी के किसी मोड़ पर यूँ होगा. लेकिन हम जैसा सोचते हैं वैसा कहाँ होता है.अक्सर ज़िन्दगी हमें उन अनजानी कठिन राहों पर ले जाती है जिनके बारे में हमने कभी सोचा ही नहीं होता है. और फिर एक वक्त ऐसा आता है जब समझ आता है कि ज़िन्दगी रिक्तता का प्रवाह है. ज़िन्दगी के हर सवाल हर पल अनिर्णीत हैं, कोई अवधारणा, कोई निर्धारण नहीं है. बस अचानक घटना है सब. शायद इसीलिए कहा गया है कि कल्पनाओं और विरोधाभासों के अथाह समन्दर का नाम 'ज़िन्दगी' है. वक्त के होठों पर हम सबके बीच मुस्कराहट और खुशियाँ सजाने वाले किसी अपने व्यक्ति का यूँ असमय चले जाना मन को व्यथित करता है. वह जो खालीपन दे जाता है उस खालीपन या रिक्तता को भर पाना नामुमकिन होता है.

समय का न कोई आरम्भ है और न कोई अंत. लेकिन हर मनुष्य का एक आरम्भ है और एक अंत भी. यही ज़िन्दगी का सरारांश है. समय की रेत कब-कैसे हाथ से फिसल जाती है, हमें पता ही नहीं चलता. कई भावनाएं, कई संवेदनाए और कई सम्भावनाएं इस 'समय की रेत' के गुबार में उड़ जाती हैं. तब हमारे सामने रह जाता है बस 'बीती यादों का एक क्षितिज़ इस क्षितिज पर खड़े होकर ध्यान में आता है कि ज़िन्दगी में कुछ 'संत्रणाएँ' ऐसी होती है जिनके 'व्याकरण' का केवल वो समझ सकते हैं जिन्होंने उन्हें भुगता है, उन्हें सहा है. दूसरों के लिए वह अज्ञात लिपि की तरह होती हैं.

आज के इस दौर में हम सबकी ज़िन्दगी की बुनावट कुछ इस तरह से हो गयी है कि हमें 'ज़िन्दगी के हौसलों' को तो सिखाया जाता है, पर हमें 'मृत्यु के सच' से दूर रखा जाता है. इंसान अपनी ज़िन्दगी में बहुत सारी गलतियाँ सिर्फ इस वजह से करता है क्योंकि मृत्यु के इस सच का पाठ उसे सिखाया नहीं जाता. ये आज की हमारी शिक्षा व्यवस्था की सबसे ऐतिहासिक भूल है और इस वजह से समाज-जीवन में संवेदनाओं का निर्मम ह्रास हो रहा है. आज परिवार और और समाज को संवेदनाओं से शिक्षित करने की जरूरत है. सामाजिक-परिवारिक स्तर पर यह सिखाया जाना चाहिए कि जब कोई इंसान अपनी ज़िन्दगी के कठिन समय में एक गंभीर बीमारी से जंग लड़ रहा हो तब उसके आत्मबल को बढ़ाने के लिए किस तरह परिवार और समाज के लोग उसके साथ खड़े हो सकते हैं. कैंसर या किसी गंभीर बीमारी के मरीज के आत्मबल को मजबूत बनाने, बीमारी और ज़िन्दगी के कठिन समय में उसका सम्बल बनने की कोशिश होनी चाहिए इससे उसके सहज मन को ज़िन्दगी के संधर्ष का सामना करने की संजीवन शक्ति मिलेगी. मृत्यु को ज़िन्दगी के साथ जाड़कर समझने और जीने की कोशिश होनी चाहिए.

आपने अंग्रेजी लेखक 'ओ हेनरी' की कहानियों में से एक मानवीय संवेदनाओं और आत्मबल की प्रेरणा देने वाली कहानी 'द लास्ट लीफ' जरूर पढ़ी होगी. इस कहानी की नायिका एक गंभीर बीमारी से जूझ रही थी, उसे लगने लगा था कि उसकी साँसों की डोर अब

सबसे अच्छा दान क्षमादान है - चाल्स बक्सन

टूटने ही वाली है. डॉक्टर जवाब दे चुके हैं. दवा काम नहीं करती. लड़की के कमरे की खिड़की से एक पेड़ नज़र आता है,जिसके पत्ते धीरे-धीरे बर्फीली आंधी में गिर रहे हैं. लड़की रोज सुबह जागती है, खिड़की से उस ठूंठ हो रहे पेड़ की ओर देखती है और अपनी ज़िन्दगी के दिन गिनती है. उसे पूरा यकिन है कि जिस दिन इस पेड़ से आखिरी पत्ता गिरेगा, वो दिन उसकी भी ज़िन्दगी का आखिरी दिन होगा. लड़की एक दिन पाती है कि पेड़ ठूंठ हो चला है, बस एक पत्ता रह गया है, जिसका उस रात गिर जाना पक्का है. लड़की सोच लेती है कि आज की रात आखिरी रात है. इसी बीच एक चित्रकार को पता चलता है कि लड़की के मन में ये बात बैठ गई कि उधर वो पत्ता गिरा, इधर उसके प्राण निकले.चित्रकार अपनी ज़िन्दगी में नाकाम था. उसने कभी ऐसा एक भी चित्र नहीं बनाया था, जिससे उसे कभी मान-सम्मान मिला हो. पर उसने तय किया वो 'पत्ते'की एक ऐसी तस्वीर बनाएगा, जो देखने में एकदम असली लगे और रात में जब तेज बर्फीली हवाओं के झोंकों से वो पत्ता गिर जाएगा, जब उस तस्वीर को वो पेड़ पर लगा देगा. चित्रकार ने सारी रात उन तेज बर्फीली हवाओं के बीच उस चित्र को आकार दिया और उसने उसे पत्ते की जगह ऐसी जगह लगा दिया, जहां से सुबह जब लड़की देखे तो उसे यह आखिरी पत्ता दिखे. लड़की सुबह जागी. उसने बहुत टूटे हुए मन से उस पेड़ की और देखा. ये क्या पत्ता नही गिरा था. रात भर चली भयंकर आंधियों में भी पतता नहीं गिरा ? उसे यकिन ही नहीं हुआ कि वों पत्ता पेड़ नहीं टूटा. उसने आँखे मल-मल कर दुबारा देखा, पर पतता अपनी जगह था. पेड़ से सारे पत्ते झड़ गए और एक अदना सा पत्ता डटा हुआ है तेज़ आंधियों के बीच ? लड़की को यकिन नहीं हुआ उसे लगा कि आज यह पत्ता बच गया है, पर कल कैसे बचेगा ? पर वो पत्ता कल भी नहीं गिरा. उस चित्रकार की पेंटिग इतनी सजीव थी कि लड़की यह समझ ही नहीं पाई कि वो पत्ता सिफ्र एक चित्र है. चित्रकार ? उस तेज बर्फीली आंधी में चित्रकार की तबियत बहुत खराब हो गई थी. वो उस रात ही मर गया था, उस आखिरी पत्ते को ज़िन्दगी देकर. लड़की ने जब देखा कि उस दिन पतता नहीं टूटा, दिन भी नहीं टूटा, तीसरे दिन भी नहीं टूटा तो उसके भीतर ज़िन्दगी की उम्मीद जगने लगी कि जब एक अदना सा पत्ता इन आंधियों को सह सकता है, तब मैं क्यों नहीं ? फिर लड़की नहीं मरी. उस आखिरी पत्ते ने उसकी ज़िंदगी में वो आत्मबल लौटा दिया, जिस्की ज़रूरत होती है जीने के लिए. इस कहानी को साझा करने के पीछे मेरा उद्देश्य केवल इतना है कि हम परिवार और समाज में एक ऐसा माहौल विकसित करें जहाँ गंभीर बीमारी से जूझते इंसान की ज़िन्दगी में उम्मीद और आत्मबल का पूरा पेड़ खिल उठे. मैंने कैंसर से संघर्ष करती मेरी बहन 'निशा' के साथ इस बात को करीब से महसूस किया है कि बीमार इंसान को गंभीर बीमारी भी भीतर से उतना नहीं तोड़ती जितना उसके मन पर किये गए संवेदनहीन पथरीले प्रहार तोड़ते हैं.

नीदरलैण्ड के 'प्रोफेसर हेन्स क्लीवर्स' की एक रिसर्च रिपोर्ट कुछ समय पहले एक मेडिकल जर्नल में प्रकाशित हुई. उन्होंने कैंसर पर कई सालों तक रिसर्च करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि कैंसर एक ऐसी बीमारी है, जिसके होने में मरीज का या उसकी जीवनशैली का कोई दोष नहीं होता है. बस इतना ही कहा जा सकता है कि कैंसर होने का अर्थ है - उसका 'दुर्भाग्य' (Bad Luck). कैंसर दरअसल शरीर की कोशिकाओं के आपसी द्वन्द और उनके आपसी झगड़े का नतीजा है. शरीर की कोशिकाएं जो एक से दो होती हैं, वो होती तो एक-दूसरे की सगी हैं, पर फिर भी आपस में क्यों उलझ जाती हैं ? इसे आज तक कोई जान नहीं पाया है. 'गाँठ' अच्छी नहीं होती, फिर चाहे वो 'शरीर' में हो या 'मन' में. 'गाँठ' सिर्फ दु:ख देती है. कैंसर में इंसान लड़ता है, जूझता है उसके शरीर में निर्मित हुई गाँठ से. जिसमें मेडिकल साइंस के कुछ उपलब्ध उपचार उसकी मदद करते हैं. शरीर पर तो हमारा नहीं ईश्वर का अख्तियार होता है. लेकिन 'मन' पर हमारा ही अख्तियार होता हैं. कोशिश कीजिये हमारी वजह से किसी के 'मन' म कोई 'गाँव' न बन, कोई तकलीफ न पहुँचे. दूसरों के दुखों पर अपने सुखों का निर्माण करने की कोशिश कुछ आत्मकेंद्रित और आत्ममुग्ध लागों को ज़िन्दगी में तात्कालिक या क्षणिक सुख दे सकती है, लेकिन मेरा मानना है कि अंतत: ज़िन्दगी के किसी न किसी मोड़ पर वक्त इसका हिसाब जरूर लेता है. हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम उस चित्रकार की तरह ज़िन्दगी में संवेदना को जियें और कैंसर या किसी गंभीर बीमारी से ग्रसित इंसान की उम्मीद और आत्मबल को आकार देने के लिए आगे आएँ और इसे अपनी ज़िन्दगी का स्वभाव बनाएँ.

एक और बात मैं आज कहना चाहता हूँ कि मरने से पहले दुनिया के हाथों में एप्पल फोन देने वाले व्यापार जगत के सबसे सफलतम व्यक्तित्व स्टीव जॉब्स ने कैंसर से अपनी मृत्यु के पहले जो चिट्ठी लिखी थी एक बार उस चिट्ठी को हमें जरूर पढ़ना चाहिए. स्टीव जॉब्स अपने जीवन के आखिरी लम्हों में कैसा महसूस कर रहे थे, अपनी भावनाओं को उन्होंने इस चिट्ठी में साझा किया है और यह एक तरह से उस शख्सियत का ज़िन्दगी के बारे में जारी किया गया श्वेत-पत्र है जिसने अपने आपको शून्य से शुरुआत करके दुनिया के शीर्ष पर स्थापित किया और फिर ज़िन्दगी में एक क्षण ऐसा आया जब वो मृत्यु-शैय्या पर है और उसे अपनी ज़िन्दगी की सारी उपलब्धियाँ फाकी लग रही हैं. स्टीव जॉब्स ने जो चिट्ठी लिखी उसमें उन्होंने लिखा है-

''एक समय था जब मैं व्यापार जगत की ऊंचीईयों को छू चुका था. लोगों की नजर में मेरी जिंदगी सफलता का एक बड़ा उदाहरण बन चुकी थी. लेकिन आज खुद को बेहद बीमार और इस बिस्तर पर पड़ा हुआ देखकर मैं कुछ अजीब महसूस कर रहा हूं. अपनी जिंदगी मैं मैंने कड़ी मेहनत की, लेकिन खुद को खुश करने के लिए या खुद के लिए समय निकालना जरूरी नहीं समझाा. जब मुझे कामयाबी मिली तो मुझे बेहद गर्व महसूस हूआ. लेकिन आज मौत के इतने करीब पहुंचकर वह सारी उपलब्धियां फाकी लग रही हैं. आज इस अंधेरे वक्त में, इन मशीनों से घिरा हुआ हूँ. मैं मृत्यु के देवता को अपने बेहद करीब महसूस कर सकता हूं. आज मन में एक ही बात आ रही है कि इंसान को जब यह लगने लगे कि उसने अपने भविष्य के लिए पर्याप्त कमाई कर ली है, तो उउसे अपने खुद के लिए समय निकाल लेना चाहिए और पैसा कमाने की चाहत ना रखते हुए खुद के लिए जीना शुरू कर देना चाहिए. अपनी कोई पुरानी चाहत पूरी करनी चाहिए् बचपन का कोई अधूरा शैक, जवानी की कोई ख्वाहिश या फिर कुछ भी ऐसा जो दिल को तसल्ली दे सके. क्योंकि जो पैसा सारी जिंदगी मैंने कमाया उसे मैं साथ लेकर नहीं जा सकता . अगर मैं कुछ लेकर जा सकता हूं तो वो हैं-''यादें''. ये 'यादे' ही तो हमारी 'अमीरी' होती हैं, जिनके सहारे हम सुकून की मौत पा सकते हैं, क्योंकि ये 'यादे' और उनसे जुड़ा 'प्यार' ही एकमात्र ऐसी चीज है जो मीलों का सफर तय करके आपके साथ जा सकती हैं. आप जहाँ चाहें इन्हें लेकर जा सकते हैं. जितनी ऊंचाई पर चाहें ये आपका साथ दे सकती हैं, क्योकि इन पर केवल आपका हम् है. जीवन के इस मोड़ पर आकर मैं बहुत कुछ महसूस कर सकता हूँ. जीवन में अगर कोई सबसे महँगी वस्तु है तो वो 'डेथ बेड' ही है, क्योंकि आप पैसा फेंककर किसी को अपनी गाड़ी का ड्राइवर बना सकते हैं, जितने मर्जी नौकर-चाकर अपनी सेवा के लिए लगा सकते हैं, लेकिन इस 'डेथ बेड' पर आने के बाद कोई दिल से आपको प्यार करे, आपकी सेवा करें, यह चीज आप पैसे से नहीं खरीद सकते. आज मैं यह कह सकता हूँ कि हम जीवन के किसी भी मोड़ पर क्यों ना हों, उसे अंत तक खूबसूरत बनाने के लिए हमें लोगों का सहारा चाहिए . पैसा हमें सब कुछ नहीं दे सकता.''

स्टीव जॉब्स की चिट्ठी में लिखी इन बातों को आपसे साझाा करके मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि एक बात हमें सहज स्वीकार करनी चाहिए कि ज़िन्दगी में महत्वपूर्ण बात ना यश है, ना सपने हैं, ना पैसा है, ना राजनिति है. ये सब चीजें जीवन का एक हिस्सा हैं, जीवन नहीं हैं. महत्वपूर्ण बात केवल इतनी सी है कि हम ज़िन्दगी के अपने हिस्से के दु:ख को कैसे सहते हैं और फिर भी ज़िन्दगी में आस्था बनाये रखते हैं. दु:ख सहने से हम बड़े नहीं बनते बलिक दु:ख को जी के बाद हम 'कितने अधिक मनुष्य' हुए और 'बने रहे' ये बात ज़िन्दगी में अहम होती है. अक्सर कुछ घटनाओं और उनसे जुड़े अनुभवों को ज़िन्दगी एक लम्बे अर्से के लिए हमारे अवचेतन में छोड़ जाती है, वक्त गुज़र जाता है, लेकिन तारी़खें हमेशा वक्त की निष्ठुरता की गवाही देती हैं. आज की तारीख मेरे लिए एक ऐसी ही तारीख है. साँसें समय के भाले से आज भी हर पल उन तकलीफों और सघन पीड़ा की अनुभूतियों को रह-रहकर कुरेदती हैं.

उसके हृदय की सघन पीड़ा, उसकी ज़िन्दगी का वो अंतिम भारी नि:श्वास पलकों की कोर पर दर्द के अश्रुओं के रूप में सदा बसा रहेगा. उसकी ज़िन्दगी से जुडी तमाम सुखद और दु:ख स्मुतियों को मन में सँजाये आज पुण्यतिथि पर श्रद्धात्मिक हृदय से नमन करता हूँ.

''ज़िन्दगी में यादों के निशाँ यूँ भी मिटते कब हैं,
बेख्याली में हमें लगता है हम भूलते सब हैं.
ज़िन्दगी के सफर में कुछ मोड़ यूँ ठहर जाते हैं,
फिर होता यूँ है कि बढ़कर भी हम बढ़ते कब हैं.

तरुण शर्मा
आशुलिपिक वर्ग - 2

राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2019

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय माल, उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय भोपाल दिनांक 1 सितम्बर 2019 से 15 सितम्बर 2019 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान के हिन्दी प्रचार-प्रसार एवं विकास हेतु विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और इसमें विजेता रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संदीप श्रीवास्तव,प्रधान आयुक्त, भोपाल आयुक्तालय थे। श्री श्रीवास्तव ने अपने सम्बोधन में सरकारी कामकाज में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं आयुक्तालय में राजभाषा हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने की संभावनाएं तलाशने हेतु सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आहवान किया। हिन्दी पखवाड़ा के तहत निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और विजयी प्रतिभागियों को नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

हिन्दी टंकण दक्षता प्रतियोगित

क्र.	नाम सर्वश्री/सुश्री	पद	स्थान	पुरस्कार राशि
1	जीतेंद ठाकुर	आशुलिपिक	प्रथम	1500/-
2	आलोक कुमार	निरीक्षक	द्वितीय	1000/-
3	सुशील कुमार कटारिया	कर सहायक	तृतीय	700/-

हिन्दी टिप्पण, पत्र एवं सृजनात्मक लेखन

क्र.	नाम सर्वश्री/सुश्री	पद	स्थान	पुरस्कार राशि
1	अखिलेनद्र नाथ वाजपायी	निरीक्षक	प्रथम	1500/-
2	मो. हारून सिद्दीकी	अधीक्षक	द्वितीय	1000/-
3	जीतेंद्र ठाकुर	आशुलिपिक	तृतीय	700/-

हिन्दी संबंधी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

	नाम सर्वश्री/सुश्री	पद	स्थान	पुरस्कार राशि
1	अनिरूद्ध पाठक	निरीक्षक	प्रथम	1500/-
2	मो. हारून सिद्दीकी	अधीक्षक	द्वितीय	1000/-
3	अविरल पांडे	निरीक्षक	तृतीय	700/-

हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता

क्र.	नाम सर्वश्री/सुश्री	पद	स्थान	पुरस्कार राशि
1	सुशील कुमार कटारिया	कर सहायक	प्रंथम	1500/-
2	मयूर गोयल	निरीक्षक	द्वितीय	1000/-
3	दीपक कुमार	कर सहायक	तृतीय	700/-

हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

क्र.	नाम सर्वश्री/सुश्री	पद	स्थान	पुरस्कार राशि
1	श्रुति शुक्ला	कर सहायक	प्रंथम	1500/-
2	मो. हारून सिद्दीकी	अधीक्षक	द्वितीय	1000/-
3	प्रदीप मिश्रा	निजी सचिव	तृतीय	700/-

दिव्यांश सिंह कक्षा–6

पुत्र श्री दिनेश सिंह अधिक्षक

आवरण पृष्ठ – बड़ा तालाब, भोपाल
पार्श्व पृष्ठ – ढोकरा कला प्रतिकृति